CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राचीन कथाएँ नई प्रेरणाएँ

5558

उषा माथुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राचीन कथाएँ : नई प्रेरणाएँ

संकलन :

डॉ० उषा माथुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :
डॉ० उषा माथुर
'हर निवास'
47-पानदरीबा, चारबाग़, लखनऊ-226019 (भारत)

© डॉ० उषा माथुर

प्रथम संस्करण, 1983

State Museum Library
Lucknow

मूल्य : 30 रुपये

5558

आवरण सज्जा—सरोज माथुर

मुद्रक :
प्रेम प्रिंटिंग प्रेस,
257, गोलागंज, लखनऊ-226018

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आभार

हिन्दी में दुर्लभ ग्रंथों और ऐतिहासिक दस्तावेज़ों के संकलन की महत्वपूर्ण और उपयोगी परम्परा रही है। इसी क्रम में 'प्राचीन कथाएँ : नई प्रेरणाएँ' शीर्षक यह संकलन भी प्रस्तुत है। प्राचीन हिन्दी गद्य में नीति और हास-परिहास संबंधी प्रतिनिधि लघुकथाओं और चुटकुलों के चयन की प्रेरणा पोस्ट डॉक्टरेट संबंधी शोधकार्य करते समय उठी थी। इस प्रकार अचानक उठने वाले विचार योजनाबद्ध होने पर अपनी उपयोगिता सिद्ध करते हैं और महत्वपूर्ण होने के कारण समय की स्थायी सम्पत्ति बन जाते हैं। इसी अन्तः स्फूर्त प्रेरणा के संबल पर यह अध्ययन तैयार हो सका है। आज हमारी सभ्यता और संस्कृति के विकास की प्राचीन धरोहरें उसके संरक्षकों की उपेक्षा मनोवृत्ति के कारण नष्ट हो, लुप्त होती जा रही हैं। उन्हें ह्रास से किसी अंश तक बचाने की भावना भी इस कार्य के मूल में निहित रही है।

इसे संवर्धित और व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने में जिनके प्रेरक परामर्शों से लाभान्वित होने का अवसर हमें प्राप्त हुआ है उनमें मान्य श्री डॉ० बाल गोविन्द मिश्र, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, श्री सेवक वात्स्यायन, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, क्राइस्ट चर्च कॉलेज, कानपुर, डॉ० राजाराम मह्रोत्रा, रीडर, अंग्रेज़ी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और प्रोफेसर डॉ० डी० डी० शर्मा, अध्यक्ष, अंग्रेज़ी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। डॉ० केसरी नारायण शुक्ल, भूतपूर्व डीन और अध्यक्ष हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ने इस अध्ययन को 'महत्वपूर्ण प्रयास' बताया और किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज, लखनऊ के कुशल सर्जन डॉ० यू०के० जैन ने 'मनोविनोद को चिकित्सा का मनोवैज्ञानिक उपकरण' बताते हुए साहित्य के बहुआयामी उपयोग और महत्व का मूल्यांकन कर उत्साहवर्धन किया और अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। प्रसिद्ध साहित्यकार आदरणीय श्री अमृतलाल नागर जी ने इस संकलन की अपेक्षा बताकर सराहना की और प्राक्कथन लिख कर गौरवान्वित किया है। इन सभी विद्वज्जनों और अन्य प्रतिष्ठित प्रतिभाओं को, जिनके अनुभवों और सुझावों से समय-समय पर लाभ उठाया है, औपचारिक धन्यवाद की अपेक्षा नहीं है, इनका सदैव आभार है। नागर जी ने मूलपाठ में भाषा और वर्तनी की ग़लतियां बहुत हैं, बताते हुए इसे शुद्ध कर छपाने का बहुमूल्य सुझाव भी दिया था, ताकि पढ़ते समय आनन्द की अनुभूति में अड़चन न हो और जनसाधारण भी इसका पूरा-पूरा लाभ उठा सके। परन्तु अपने उद्देश्य को सम्मुख रखने और मूलपाठ के स्वरूप को न छेड़ने की भावना से उनके इस सुझाव पर सम्प्रति अमल नहीं हो सका है। सीमित साधनों के कारण इनका आधुनिक हिंदी में परिवर्तन भी संभव नहीं हो सका है। इसमें कुछ कथाओं और चुटकुलों के भावों का अंकन हमारे प्रिय छात्र श्री अनिल कुमार द्विवेदी 'अंकुर' ने किया है। उनके लिए शुभकामनाएँ हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन हेतु सामग्री उपलब्ध कराने में नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता, नेशनल आरकाइव्ज, नई दिल्ली और नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के पुस्तकालयाध्यक्षों का पूर्ण सहयोग मिला है। परन्तु कार्य-प्रणाली की अव्यवस्था और दुर्दशा के कारण भारत कला भवन, वाराणसी के साहित्य विभाग की सामग्री का पुनः अवलोकन करना संभव नहीं हुआ। भारतेंदु संबंधी सभी आवश्यक सामग्री उनके वंशजों में डॉ० ब्रजेन्द्र किशोर अग्रवाल ने रुचिपूर्वक सुलभ करवाई, जिससे यह कार्य अत्यल्प अवधि में पूरा हो सका है। इसके लिए उन्हें धन्यवाद है।

अंत में इस कृति के मुद्रक श्री गोपाल नारायण भार्गव, प्रेम प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ साधुवाद के पात्र हैं, जिन्होंने परिश्रमपूर्वक विशेष प्रकार के टाइपों की व्यवस्था कर पाठ को यथावत उद्धृत करने में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया। इससे आत्म-परितोष भी है। उनके आयास से यह पुस्तक अत्यल्प समय में सुन्दर और आकर्षक रूप से मुद्रित हो सकी है। हमें विश्वास है कि यह भाषा, साहित्य और संस्कृति के जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी होगी और जन-साधारण को मनोविनोद की कुछ सामग्री दे सकेगी।

यह संकलन अपने आदरणीय पिताजी प्रोफेसर डॉक्टर श्याम नारायण माथुर, अध्यक्ष, फिजियोलोजी विभाग, मेडिकल कालेज, लखनऊ की स्मृति में उनके जन्म-दिवस रामनवमी के अवसर पर सादर समर्पित है।

डॉ० उषा माथुर

'हर निवास'
47-पानदरीबा, चारबाग़
लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राक्कथन

पद्मभूषण
अमृतलाल नागर
Amritlal Nagar

दूरभाष : ८२३५० Phone : 82350
चौक, लखनऊ–२२६००३
Chowk, Lucknow-226003

14. 8. '83

कथा कहना और सुनना मनुष्य की आदिम कमज़ोरी है। इस विधा ने मानव सभ्यता के इतिहास को विकसित करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। धर्म, अध्यात्म, शिक्षा और मनोरंजन, इन सभी को अपने प्रचार और प्रसार के लिये कहानियों का सहारा ही लेना पड़ा है। सर जे० ए० हमर्टन के अनुसार शेक्सपियर के महान् नाटकों का मूल प्रेरणा स्रोत भी पुरानी ऐतिहासिक कथायें ही हैं। बुद्ध ने जातक कथाओं के माध्यम से ही अपने धर्म का ज्ञान लोक को दिया था। विष्णु शर्मा ने बिगड़े राजकुमारों को कहानियों के माध्यम से ही सुधारा। नैमिषारण्य की 'पुराण-कथा यूनिवर्सिटी' ने भारत की छोटी छोटी राष्ट्रीयताओं को एक सूत्र में पिरो कर उसे एक महान् राष्ट्र बनाया। सशक्त सत्ताधारियों के अत्याचारों से बदला लेने के लिये निरीह जनता ने जानवरों की कहानियां गढ़ कर अपनी व्यथा कथा अभिव्यक्त की है। जादूगरों ने भी इन्हीं का सहारा लेकर अपने जादुई रहस्य बचाये हैं।

डॉ० आशा माथुर ने ऐसी ही शिक्षाप्रद और रोचक लघु कथाओं का संग्रह प्रस्तुत करके सचमुच बधाई पाने लायक काम किया है। मैं आशा करता हूँ कि पाठक भी इन पुरानी कथाओं से नयी प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

अमृतलाल नागर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिचय

मानव प्रकृति और मनोविनोद की प्रगाढ़ता का स्रोत अनादिकाल से प्रवहमान है। सभ्यता के आरम्भ से मानव अपने मनोविनोद के लिए नाना प्रकार के साधन जुटाता आया है। इस क्रम में उसने विविध कलाओं और काव्यमय विनोदों का विकास कर रोचक और कौतूहलवर्धक किस्से, कथाओं और कहानियों का सृजन प्रारम्भ किया, जिनमें कुछ कथाएँ और कहानियाँ कपोल कल्पनाओं पर आधारित रहीं तो कुछ दैनिक अनुभवों की ठोस आधार भूमि पर टिकी रहीं। सदाचार और सच्चरित्रता के संदेश का प्रसार और सुव्यवस्थित समाज के निर्माण की भावना सभी में निहित थी। इस प्रकार मानव और कथा-कहानियों का जन्म साथ साथ हुआ।

संसार की सभी समुन्नत भाषाओं के साहित्य की समृद्धि में ऐसी रचनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संस्कृत में ऋग्वेद से लेकर उपनिषद्, पुराण, रामायण और महाभारत में विविध प्रकार की कथाएँ और कहानियाँ मिलती हैं, जो आध्यात्मिक प्रवचनों और नीति-प्रधान उपदेशों से परिपूर्ण हैं। इस परम्परा में वृहत्कथा, कथासरित्सागर, वैताल-पंचविंशतिका, सिंहासन द्वात्रिंशतिका, पंचतंत्र और हितोपदेश तथा पालि भाषा में जातक की लघुकथाएँ भी मिलती हैं, जिनमें नीतितत्व की प्रधानता के साथ मनोरंजन का अंश भी कम नहीं है। इनमें लोकजीवन का अत्यन्त निकट से निरीक्षण है और उससे संबंधित घटनाओं का कौतूहलवर्धक, रोचक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वर्णन भी मिलता है। कहीं-कहीं इनमें मानव के सदृश पशु-पक्षियों को भी अर्थमयी वाणी और भावुकता से युक्त देखा गया है।

हिंदी साहित्य के इतिहास की 19वीं शती इस प्रकार की लघुकथाओं और लघुकहानियों से भरीपूरी है। इस शती के आरम्भ में एक ओर तो पंचतंत्र, हितोपदेश और ईसप की कथाओं की शैली के आधार पर मौलिक लघुकथाएँ और लघुकहानियाँ लिखी गईं तथा संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं से अनूदित हुई, जिसका श्रेय सन् 1800 ईसवी में कलकत्ते में वेलेज़ली द्वारा स्थापित फोर्ट विलियम कॉलिज के हिन्दुस्तानी-विभाग के अध्यक्ष डॉक्टर बॉर्थविक गिलक्राइस्ट को प्राप्त है तो दूसरी ओर इस कॉलिज से इतर लेखकों में इंशा अल्लाखाँ ने लौकिक चरितों को आधार बनाकर 'उदयभानुचरित या रानी केतकी की कहानी' शीर्षक से 'ठेठहिंदी' में कहानी लिखी और आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रथम मौलिक कहानीकार होने का गौरव प्राप्त किया। इस कहानी में मात्र मनोरंजन के लिए इतिवृत्त का विकास किया गया है।

यह विदित है कि अंग्रेज़ भारतवर्ष में व्यापार करने के लिए आए थे, इसके साथ-साथ वे अपने धर्म का प्रचार और प्रसार भी करते रहे और-धीरे धीरे अपने शासन की कुशलतापूर्वक स्थापना करने में भी सफल हुए। उन्होंने अपनी व्यापारिक, धार्मिक और प्रशासनिक आवश्यक-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ताओं की पूर्ति के लिए शासक और शासित में परस्पर क्रियात्मक-व्यवहार और बोधगम्यता बढ़ाने के उद्देश्य से, देश के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक परिवेश का अवलम्ब ग्रहण कर यहाँ की प्रमुख भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने की व्यवस्था की। यह महान कार्य डॉक्टर गिलक्राइस्ट की देखरेख में सम्पन्न हुआ। उन्होंने विशुद्ध शैक्षणिक दृष्टि को ध्यान में रखकर ईस्ट इंडिया कम्पनी के कर्मचारियों के लिए भारत में सर्वबोधगम्य भाषा खड़ी बोली (हिन्दी) की विविध शैलियों में अनेक प्रकार की रचनाएँ तैयार कीं और करवाईं। उन्होंने संस्कृत के पौराणिक आख्यानों के अनुवाद करवाए तथा व्याकरण और कोश-ग्रंथों के साथ भारतीय रीति-रिवाज़ों, पर्व-त्यौहारों, रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, जाति-धर्मों और सामाजिक कुप्रथाओं और कुरीतियों से संबंधित, निबंध, लेख, लघुकथाएँ और कहानियाँ, स्वयं लिखीं और कुछ अन्य शिक्षकों और लेखकों से भी लिखवाईं। इसी क्रम में ईसप की कहानियों के अंग्रेजी भाषा से हिन्दी में अनुवाद भी हुए। स्वयं डॉक्टर गिलक्राइस्ट ने ब्रजभाषा और हिन्दुस्तानी के साथ खड़ीबोली के स्वरूप के उदाहरण देते हुए ऐसी लघुकथाएँ उद्धृत की हैं। ये उनकी 'Hindee Roman Orthoepigraphical Ultimatum' नामक पुस्तक में तथा उनके निर्देशन में तैयार हुई रचना 'Oriental Fabulist' में हैं। इन लघु कहानियों के शीर्षक भी उन्होंने दिए हैं। गिलक्राइस्ट के पश्चात विलियम प्राइस ने भी अपने अध्यक्षताकाल में ऐसी लघुकथाओं और लघुकहानियों का संकलन किया, जो उनकी 'Hindee Hindoostanee Selections' के प्रथम भाग में 'मनोहर कहानियाँ सुगम बोली में' शीर्षक से संग्रहीत हैं। इसमें उन्होंने पूर्व परंपरा से प्राप्त लघुकथाओं के साथ कुछ अतिरिक्त कथाएँ भी अपनी ओर से जोड़ दी हैं।

इन कथाओं और कहानियों में कुछ हिन्दू जीवन से संबंधित हैं तो कुछ मुस्लिम जीवन को आधार बनाकर लिखी गई हैं। इनके रहन-सहन, आचार-व्यवहार, खान-पान, रीति-रिवाज़, शिक्षा-दीक्षा, गुण-दोष, योग्यता-अयोग्यता, रूप-रंग और आकार-प्रकार इत्यादि बातों को आधार बनाया गया है। ग़रीब और अमीर, शिक्षित और अशिक्षित, चतुर और मूर्ख, अफ़ीमची और कंजूस प्रवृत्ति के पात्र इन कथाओं में हैं। इनमें कायस्थ, जाट, बनिए, चौबे, मुग़ल इत्यादि विभिन्न जातियों की जातिगत और अहीर, गड़रिये, लुहार, मुल्ला, काज़ी, भाट, योगी और संन्यासियों आदि के पेशे, व्यवसाय और मनोवृत्ति संबंधी विशेषताओं का अंकन है। इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तित्वों में अकबर और बीरबल, नादिरशाह और दाराशिकोह आदि के जीवन से जुड़े किस्से भी कम नहीं हैं। इनमें शहरों की विशेषताओं से संबंधित कथाएँ भी हैं। जैसे, मथुरा और बनारस शहर की विशेषताएँ चौबे जाति में दिखाई गई हैं तो देहली जैसे शहर की विशेषताएँ चतुर प्रवृत्ति के पात्रों में दिखाई गई हैं। सभी प्रकार के पात्रों के दैनिक जीवन में घटित साधारण परन्तु अप्रत्याशित और रोचक प्रसंगों की झलकियाँ कुछ इस प्रकार से प्रस्तुत हैं कि वे एक ओर तो पाठकों का मनोरंजन करती हैं तो दूसरी ओर मार्मिक और सजीव वर्णन शैली उसके अन्तर्मन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का स्पर्श कर अपने संदेश-उपदेश की अमिट छाप छोड़ती चलती है। इनमें मानव मनोविज्ञान को निकट से देखने का प्रयास है। मानवीय व्यवहार में सदाचार, सच्चरित्रता, सहृदयता, सहानुभूति, दयालुता आदि सद्‌गुणों की प्रतिष्ठा करना तथा मानव की चिंतनशक्ति और प्रतिभा-कौशल को प्रखर करना, इन रचनाओं का प्रमुख ध्येय है। इनमें समाज में प्रचलित प्रत्येक सामाजिक व्यवहार और मानवीय आचरण की पृष्ठभूमि में एक घटना की योजना है। जिस क्रम से घटना घटित हुई है, उसी क्रम से कथानक का प्रस्तुतिकरण है। इनमें आधुनिक कहानियों के समान कथानक और घटनाओं का विस्तार अथवा एक मुख्य कथानक के साथ-साथ चलने वाले अन्य गौण कथानक तो नहीं मिलते, परन्तु घटनाओं की विचित्रता रोचकता का, वर्णन की स्वाभाविकता सरलता का और शैली की संक्षिप्ति कौतूहल सजग रखने का कारण बनी है। ये आकार में अत्यन्त लघु हैं और एक या आधे पृष्ठ में अथवा चार-पाँच वाक्यों में समाप्त हो गई हैं। इनमें वार्तालाप करने वालों का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसलिए कौन किससे बात कह रहा है, यह शीघ्र पता नहीं चलता। फिर भी अन्विति का गुण सबमें है। भाव और प्रभाव में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं है। अभिव्यक्ति की स्पष्टता सबमें वर्तमान है। कुछ कथाएँ पूर्व परम्परा से प्राप्त मुहावरों, कहावतों तथा सूक्तियों के चरितार्थीकरण और स्पष्टीकरण के लिए लिखी गई प्रतीत होती हैं तो कुछ के द्वारा नये मुहावरों और नई कहावतों का प्रचलन हुआ। अपनी इन सभी समन्वित विशेषताओं के कारण कुछ कथाएँ अंग्रेजी के 'Tale style' से अधिक भिन्न नहीं कही जा सकतीं। इनकी भाषा भी पात्र, परिस्थिति और प्रसंग के अनुसार है। हिन्दू पात्रों से संबंधित कथाओं में ब्रजभाषा और खड़ीबोली हिन्दी प्रधान है तो मुस्लिम और मुग़ल पात्रों से संबंधित रचनाओं में उर्दू और फ़ारसी की अधिकता है। इसी प्रकार हिन्दुओं में कायस्थ जाति से संबंधित कथाओं में उर्दू का प्रभाव अधिक दिखाया गया है तो चौबे और ज्योतिषियों की भाषा में संस्कृत शब्दावली का प्रयोग है।

मानव के सर्वांगीण विकास में स्कूली जीवन को एक महत्वपूर्ण आयाम माना गया है। इस अवधि में विद्यार्थियों की नैसर्गिक विशेषताओं और बौद्धिक क्षमताओं को उभार कर, उनके व्यक्तित्व, वैयक्तिकता, चरित्र और आचरण को सरलता से मोड़ा जा सकता है और उन्हें सुसंस्कृत और शिष्ट ढाँचे में ढालकर समाज का योग्य नागरिक बनाया जा सकता है। शैक्षणिक जीवन में इस महत्व को स्वीकार करते हुए इन शिक्षाविदों ने विद्यार्थियों में ज्ञानवर्धन के साथ आचार-व्यवहार संबंधी विवेक जाग्रत करने और उनमें नैतिक गुणों की वृद्धि करने के उद्देश्य से सत उपदेश, माता-पिता के ऊपर भक्ति, मिथ्या कहना, भलमनसात और कृतज्ञता, कृतघ्न का दण्ड, सुख का मूल इत्यादि शीर्षकों से सामान्य बातों का वस्तुकथनात्मक शैली में वर्णन कर कहानी का रूप देने का प्रयास किया है। इनमें जीवन की यथार्थता का स्पर्श और मानवीय सत्यों का उद्‌घाटन है और मानव के सुखात्मक और दुखात्मक अनुभवों का अभिधाशैली में चित्रण है। इसलिए इनमें मनोरंजन और हास-परिहास का पक्ष उभर नहीं सका है। ये कहा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नियाँ भी मुख्य रूप से विद्यार्थी में विभिन्न सामाजिक गुणों को विकसित करने और उसके क्रम-वद्ध, व्यवस्थित और संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं। नियमित और अनुशासित जीवन यापन का संदेश इनमें छिपा है। इन रचनाओं के मूल अंग्रेजी पाठ भी अनुवादकों ने दिये हैं। इनके अनुवादकों में एम० टी० एडम और डब्ल्यू० टी० एडम के नाम प्रमुख हैं।

लघुकथाओं और लघुकहानियों की इस शृंखला की दूसरी कड़ी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखी रचनाएँ हैं। भारतेन्दु ने देश और समाज की आवश्यकताओं को उनकी तह में जाकर देखा और परखा तथा उन्हें आधार बनाकर विशुद्ध साहित्यिक भावना से इस विधा का विकास किया। यद्यपि भारतेन्दु ने काव्यशास्त्रीय मानदण्डों पर तौली जाने वाली आधुनिक कलात्मक कहानियों के समान कोई कहानी नहीं लिखी, परन्तु एक रचना 'एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती' शीर्षक से आरम्भ की थी, जो अपूर्ण रही। उन्होंने हिंदी भाषा की विविध आयामी उन्नति और समृद्धि को ध्यान में रखते हुए, अपने पूर्व लिखित और अनूदित लघुकथाओं और लघुकहानियों की परम्परा में, सैकड़ों की संख्या में लघुकथाएँ और परिहास पूर्ण चुटकुले लिखे, जिनके कथानक भी दैनिक घटनाओं पर आधारित हैं। इन रचनाओं के पात्र भी समाज के प्रत्येक वर्ग से हैं। राजा विक्रमाजीत, अकबर, सूरजमल, सर वाल्टर स्कॉट, ड्यूक आदि ऐतिहासिक व्यक्तित्व; कायस्थ, जाट, बनिये और ज़मींदार, इत्रफरोश, सौदागर, जज, वकील, शूरवीर, प्रतापी, मूर्ख, क्रोधी, निर्लज्ज, मसख़रे, अफीमची, अंधे, बहरे और कानें आदि इनके पात्र हैं। वास्तव में भारतेंदु ने इतिहास पुरुषों के जीवन से जुड़ी घटनाओं का चित्रण कर समाज में अतीतबोध जाग्रत करना चाहा, विभिन्न जातियों से संबंधित हास्य-व्यंग्य लिखकर उन्हें जातिगत पहचान से अवगत कराया और विभिन्न व्यवसायों में लगे व्यक्तित्वों का चित्रण कर व्यावसायिक विशिष्टताओं की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने शूरवीरों और प्रतापियों के शौर्य का चित्रण कर तत्कालीन समाज को वीर, शक्तिशाली और कुशल बनाना चाहा और विभिन्न वृत्तियों से प्रभावित लोगों का अंकन कर उस प्रवृत्ति विशेष के गुण दोषों को बताया। ग़रीबों, पीड़ितों, असहायों और विकलांगों का चित्रण कर सामाजिक दायित्व और कर्त्तव्य बोध की भावना पैदा करनी चाही, जिससे समाज संकीर्णताएँ छोड़कर आदर्श जीवन यापन की ओर प्रेरित हो सके। भारतेंदु ने मथुरा के चौवों और बुन्देलखण्डी मुसाफ़िरों पर भी लघुकथाएँ लिखी हैं, उसी प्रकार जैसे आज सिख सरदारों और बलिया शहर के निवासियों को विषय बना कर लघुकथाएँ और चुटकुले लिखे जा रहे हैं। इस प्रकार भारतेन्दु ने विविध प्रकार के व्यक्तित्वों के जीवन से सम्वद्ध प्रभावकारी विशेषताओं और मनोभावनाओं का शब्दांकन किया और अपने पाठकों को तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था से अवगत कराया। हास-परिहास शैली में लिखी होने के कारण ऐसी रचनाएँ एक ओर तो पाठकों का मनोविनोद करती हैं तो दूसरी ओर नैतिकता की भावना से पूर्ण होने के कारण उनमें उदारता, कोमलता, सदाचरण और सहानुभूति आदि उच्च गुणों की प्रतिष्ठा करती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतेंदु ने प्रतिदिन जीवन में होने वाली विलक्षण सी उक्ति या विनोद करने वाली अनूठी और अनोखी सी बातें लेकर एक खण्डचित्र सा उपस्थित करने वाले अनेक चुटकुले भी लिखे हैं। कुछ चुटकुलों के शीर्षक भेद, अद्भुत संवाद, खुशामद, मुँहतोड़ जवाब, दिल्लगी-बाज़ आदि हैं। उनकी सभी रचनाएँ 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' पत्रिका के वर्ष 1874 ईसवी से 1879 ईसवी तक के विभिन्न अंकों में 'चोज़ की बातें' शीर्षक से प्रकाशित हैं। इनमें रचनाकार का नाम नहीं है। भारतेंदु की ये सामग्री उनके मित्र बाबू रामदीन सिंह द्वारा 'परिहासिनी' शीर्षक से पुस्तकाकार में प्रकाशित है।

हिन्दी, यद्यपि इस अवधि तक भारत की सर्वप्रचलित भाषा बन चुकी थी, परन्तु यह न तो प्रशासन में स्वीकृत थी और न शिष्ट समाज में मान्य। राजकाज और सभ्य समाज में फ़ारसी और इसके साथ अंग्रेज़ी भाषा प्रतिष्ठित थी। साहित्य में ब्रजभाषा का आधिपत्य था, जिससे हिन्दी का चतुर्दिक विकास न हो सका। हिन्दी भाषा का साहित्यिक रूप इन भाषाओं से प्रभावित हो रहा था। ब्रजभाषा की व्यापकता से बिरियाँ, लौंडी, वंचना, बोझन, तैं, सोई, सोहीं, मरैगो, लड़ाय, उड़ाय, पाय, तिसलिये इत्यादि अनेक शब्द खड़ी बोली (हिन्दी) में प्रवेश कर चुके थे। पूर्वीभाषी समाज से गल्प, बूझना जैसे शब्द भी हिन्दी में सहज रूप से स्वीकार कर लिये गए थे। इसी प्रकार फ़ारसी आदि भाषाओं से चराग़, तनहा, ग़ुलाम, दरवाज़ा, रिसाला जैसे शब्द बोलचाल की सम्पत्ति बन चुके थे। भारतेन्दु ने प्रारंभिक हिन्दी के मिश्रित स्वरूप के स्थान पर हिन्दी के विशुद्ध रूप का प्रचलन किया। जिसमें 16.25 प्रतिशत संस्कृत के तत्सम शब्द, 81.1 प्रतिशत तद्भव शब्द और 1.52 प्रतिशत शब्द अरबी फ़ारसी भाषाओं के हैं। उच्चारण के अनुरूप वर्तनी रखने की प्रवृत्ति के कारण आवता, वुह, यिह, उन्न, चाओ जैसे अनेक रूप प्रारंभिक हिन्दी में बहुलता से प्रयुक्त हो रहे थे। इनके वैकल्पिक रूप आता, वह, यह, उसने इत्यादि भी साथ-साथ विकसित होने लगे थे। यही समयान्तर पर भारतेंदु की हिन्दी में सबल बनते गए, परन्तु अपवाद रूप में जनपदीय बोलियों के भई, भए, मजदूरे, सुनाय, मूजी जैसे रूप भी जुड़े रहे। इसी प्रकार क्रियाशब्दों से निर्मित संज्ञाएँ यथा, बुलाहट इत्यादि और संज्ञा शब्दों के साथ'-आय' और'-आव' प्रत्ययों से बनी नामिक संयुक्त क्रियाएँ भी धीरे-धीरे समाप्त होती गईं। भारतेंदु काल तक आते-आते ऐसी क्रियाएँ सहायक क्रियाओं से बनाई जाने लगीं।

खड़ीबोली की प्रारंभिक रचनाओं में प्रयुक्त अनचढ़, खप्पर, घुड़चढ़, छदाम, ढपना इत्यादि शब्द भारतेंदुकाल तक साहित्यिक भाषा से लुप्त होने लगे और अनेक शब्दों में अर्थ-परिवर्तन होना भी आरंभ हो गया। रंडी, खटराग, घट, घटाटोप, चबेना, भैया, पोतड़ा, बाँका इसी प्रकार के कुछ शब्द हैं। शब्दों के समान इंतजारी खैंचना, उदास होना, चौकस होना, डोंडी फेरना, पीठ लगना इत्यादि मुहावरे आज के संदर्भ में पुराने पड़ चुके हैं और प्रारंभिक हिंदी के विशिष्ट प्रयोग कहलाने लगे हैं। चौकस होना मुहावरा आज साहित्यिक शैली की अपेक्षा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बोलचाल की हिन्दी और उर्दू में सुनने आता है । इसी प्रकार सबकी ध्यान, अधिक अस्थिरता के पीछे जैसे अनन्वित वाक्यांश भी बदलते हुए भाषायी परिवेश में पुराने पड़ चुके हैं और आज भाषा की अपरिपक्व अवस्था के उदाहरण कहलाने लगे हैं । भारतेंदु ने अरबी-फ़ारसी और अंग्रेजी भाषाओं की वाक्य-रचना शैली से प्रभावित वाक्यों के स्थान पर हिन्दी की अपनी शैली का प्रचलन किया और भाषा का एक परिष्कृत साँचा साहित्य-सृजकों को दिया, जो वर्तमान साहित्यिक हिन्दी का अवलंब है । उन्होंने समय और समाज की आवश्यकता देखते हुए भाषा में विविधता से एकरूपता लाने का प्रयास किया और भाषा के साहित्यिक परिवेश में प्रारंभिक हिन्दी की लुप्त होती जा रही प्रवृत्तियों के स्थान पर हिन्दी भाषा के समसामयिक प्रचलित और सर्वस्वीकृत रूप को स्थान दिया । भाषा के इस स्वरूप को उन्होंने 'नई चाल' की हिन्दी कहा और इसी में अपनी प्रसिद्ध पत्रिका 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' का प्रकाशन आरंभ किया ।

स्पष्ट है कि गद्य की इस विधा में खड़ीबोली (हिन्दी) का सर्वप्रथम प्रयोग योरोपीय विद्वानों ने किया जो परवर्ती साहित्यकारों के लिए प्रेरणा का उत्स बना । इन शिक्षाविदों ने भाषा पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विशुद्ध शैक्षणिक भावना से हिन्दी के तत्कालीन प्रचलित स्वरूप में लघुकथाएँ और लघुकहानियाँ लिखकर अपने कर्मचारियों को भारतीय ज्ञान विज्ञान आदि से न केवल परिचित कराया वरन् उन्हें शासन के सफल और सुचारू रूप से संचालन करने के लिए विविध क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली भी दी । इन रचनाओं के माध्यम से उन्होंने व्यक्ति की जाति, धर्म, वय, शिक्षा, सामाजिक पद प्रतिष्ठा, देशी और विदेशी तथा ग्रामीण और शहरी पर्यावरण से प्रभावित भाषा-चुनाव का ज्ञान कराया और विभिन्न संदर्भों और नाना परिवेशों में प्रयुक्त होने वाली भिन्न-भिन्न वार्ताशैलियों की व्यावहारिक शिक्षा भी दी । साहित्य रचना उनका प्रमुख उद्देश्य नहीं था । यह कथाएँ विषय की दृष्टि से कौतूहलवर्धक, चित्रात्मक, शिक्षात्मक, नीतिपूर्ण, हास्य-व्यंग्यात्मक और वस्तुकथनात्मक हैं । समय बीत जाने पर ये आज भी अपनी लोकप्रियता में पीछे नहीं हैं । ये उतनी ही रोचक और जनप्रिय हैं, जितनी पहिले थीं । इनमें जीवन के सत्य से साक्षात्कार कराने की क्षमता और यथार्थबोध कराने की शक्ति आज भी सुरक्षित है । संवेदनाएँ जाग्रत कराने और हृदय को उद्वेलित करने की सामर्थ्य, इनमें आज भी पहिले जैसी ही है । सभी में भावनाओं और विषयों के चित्रण और वर्णन में किसी प्रकार की लाग-लपेट की गंध नहीं मिलती । सरल और सहज शैली में लिखी होने पर भी ये साहित्य के प्रयोजन को सिद्ध करती हैं । भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने साहित्यिक भावना से लघुकथाओं, लघुकहानियों और परिहासपूर्ण चुटकुलों का सृजन, विशुद्ध साहित्यिक दृष्टि से किया है । इसलिए इनमें पूर्ववर्ती नीतितत्व प्रधान रचनाओं की अपेक्षा मनोविनोद का भाव प्रधान है । इनमें मनोविनोद के साथ-साथ समाज में नैतिक मूल्य जाग्रत करने और हिन्दी भाषा और साहित्य की इस विधा के पोषण और विकास का प्रयोजन भी निहित है । भारतेंदु को अभी तक ब्रजभाषा के कवि और 'अंधेर नगरी चौपट्ट राजा' नाटक के रचयिता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के रूप में जाना जाता रहा है। परन्तु चुटकुलाकार के रूप में भी उनकी एक अलग पहचान है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष भी सम्मुख आते हैं कि एक भाषा भिन्न-भिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेशों में पनपने पर, भिन्न-भिन्न शैलियों में प्रतिफलित होती है। जातीय-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा सामाजिक संदर्भ भाषायी भिन्नता के प्रमुख कारण होते हैं। उनमें परिवर्तन होने पर भाषा में भी परिवर्तन होते रहते हैं। अर्थात भाषा, निरंतर परिवर्तित परिस्थितियों और परिवेशों के अनुरूप अपने को ढालती रहती है और विकसित होती रहती है।

काव्यशास्त्रीय कलात्मकता से दूर होने के कारण ऐसी रचनाओं को साहित्य में उपयुक्त स्थान प्राप्त नहीं हो सका है। परन्तु इनमें मानव के भीतर स्पंदित होने वाली अनुभूतियों का चित्रण और अनुभवों का मूल्यांकन होने और जीवन में उतारने के लिए श्रेष्ठ और पवित्र सिद्धान्तों का निरूपण होने के कारण, इनकी महत्ता और उपयोगिता स्वयं सिद्ध है। मानव सभ्यता के इतिहास को विकसित करने और भारतीय संस्कृति को जीवित रखने में भी इन रचनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस योगदान और महत्व को देखते हुए, इन्हें शास्त्रीय लक्षणों की कसौटी पर कसना और परिभाषाओं में बाँधना उचित नहीं। साहित्य के व्यापक क्षितिज में इनका अपना स्थान है। आज वास्तव में साहित्य के जितने अंश को महत्वपूर्ण समझकर जानने का प्रयास हुआ है, उसकी अपेक्षा उसे पूर्ण बनाने वाले वह अंश भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं, जिन्हें गौण समझकर छोड़ दिया जाता रहा है। इस दृष्टि से यहाँ 19वीं शती की सौ लघु-कथाओं, लघुकहानियों, किस्सों और चुटकुलों का चयन किया गया है। इसमें मौलिक और अनूदित दोनों प्रकार की रचनाओं के उदाहरण संकलित हैं। एक लेखक की एक विषय पर लिखी रचनाएँ, जो मूल पुस्तक और पत्रिका में यत्र तत्र बिखरी हुई थीं, उन्हें विषय क्रम के अनुसार व्यवस्थित किया है। कुछ रचनाओं के शीर्षक मूल पाठ में थे, जिनमें शीर्षक नहीं थे उनमें अपनी ओर से शीर्षक दिये हैं। कहानी लड़कों और मेंढकों की, कहानी पहाड़ की जिसको जनने की पीर उठी, भलमनसात और कृतज्ञता, पुण्य का फल, बड़ा मसख़रा, जातीय पक्षपात, वैरी वेल, बात की धुन, दुआ मांगना, मुफ्तख़ोरे, दिल्लगी की बातें, अचूक जवाब, हैवान, अफीमची, बीबी दौड़ मैं सारा खुला, अमृत की वर्षा, चुटकिले, बहुत चूके, भेद, खुशामद, मुँहतोड़ जवाब, अद्‌भुत संवाद तथा लाला साहब का रमचेरा शीर्षक मूल रचनाओं में हैं। कुछ लघुकथाओं और चुटकुलों के भावों के अंकन करने का प्रयत्न भी इसमें किया है।

प्राचीन मूल पाठ में भाषा का स्वरूप, वर्तमान साहित्यिक खड़ी बोली (हिन्दी) की तुलना में अटपटा सा लगता है। इसी प्रकार शब्दों की वर्तनी भी वर्तमान की तुलना में पर्याप्त भिन्न है। इसे यथावत रखा गया है ताकि हिन्दी भाषा का प्राचीन स्वरूप अपने मौलिक रूप में बना रह सके और भाषा के विकास की परम्परा, सुनियोजित और शृंखला बद्ध रूप में देखी जा सके। इसी उद्देश्य से कुछ वर्णों के नीचे नुक्ते लगाने पड़े हैं, जो मूलपाठ में थे। व़, य़ के अतिरिक्त नुक़्ते वाले अन्य वर्ण अरबी और फ़ारसी शब्दों में हैं। मुद्रण में असुविधा होने के कारण 'ह' के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीचे नुक़्ता नहीं दिया जा सका है । यह निम्नलिखित हैं :

अ़ : कंठ्यस्थान युक्त विशेष उच्चारण के लिए ।

त़ (tw) व ध्वनि युक्त त । स्पर्श, कंठ्यस्थान युक्त दन्त्य त ।

व़ (w,v,b) व और ब के लिए प्रयुक्त वर्ण ।

स़ (ṣ, s̱) व ध्वनि युक्त स । संघर्षी, कंठ्यस्थान युक्त स ।

ह (ḥ) अधिक बलपूर्वक उच्चरित, संघर्षी स्वरयंत्रमुखी ह ।

उपयोगिता को देखते हुए, पुस्तक के अंत में तीन परिशिष्ट हैं । प्रथम परिशिष्ट संदर्भों के लिए है । इसमें सहायक और आधार ग्रंथों का विवरण और पृष्ठ संख्याएँ हैं । तिरछी रेखा से पूर्व की संख्या, उदाहरणों के क्रम की सूचक है और उसके बाद वाली संख्याएँ मूल पुस्तक और पत्रिकाओं के पृष्ठों की सूचक हैं। जिन पुस्तकों में पृष्ठ संख्या नहीं दी हुई थी, उनके उदाहरणों की संख्या का विवरण दिया है। द्वितीय परिशिष्ट में विशिष्ट शब्दों के अर्थ और मुहावरे हैं तथा तृतीय परिशिष्ट में प्रमुख लेखकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है ।

दिनांक, रामनवमी **उषा माथुर**

21 अप्रैल, 1983

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

1. आभार .. ग
2. प्राक्कथन .. ङ
3. परिचय .. छ
4. संकलन— .. 1–36

 1. कहानी लड़कों और मेंढकों की .. 1
 2. कहानी पहाड़ की .. 1
 3. मुँह ढाप के सो रहो .. 1
 4. मालिक और ग़ुलाम .. 2
 5. मुग़ल की जामनें .. 2
 6. किसी का मुँह चले किसी का हाथ .. 2
 7. जिसकी लाठी उसकी भैंस .. 3
 8. दाता के तीन गुन .. 3
 9. किसी का घर जले कोई तापे .. 3
 10. पड़िया मोल भैंस घतौना .. 3
 11. मच्छर और हवा .. 4
 12. बादशाह का न्याय .. 4
 13. राम भरोसे बैठकर सबका मुजरा ले .. 4
 14. राजा और ज्योतिषी .. 5
 15. मिर्ज़ा साहब का पनीर .. 5
 16. बादशाह इब्राहिम .. 6
 17. रुपयों का तोड़ा .. 6
 18. काज़ी का घर .. 6
 19. न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी .. 6
 20. टेढ़ी खीर .. 6
 21. आप डूबे तो जग डूबा .. 8
 22. अमीर की सवारी .. 8
 23. ग़ुलाम की मजबूरी .. 8

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठ संख्या

24. बीबी रांड हुई	..	8
25. राही की सीख	..	9
26. दुधेल गाय	..	9
27. खोटे पैसे का मूल्य	..	9
28. पुण्य का फल	..	9
29. अफ़ीमची राजपूत	..	10
30. नौसिखिया राजकुमार	..	11
31. दुख सुख प्रतिदिन संग हैं	..	11
32. आपस की फूट	..	11
33. बनिया बटोही	..	12
34. बनारसी चौबे	..	12
35. बस्ती का मुल्ला	..	13
36. ढीठ वैरागी	..	13
37. मियाँ की डाढ़ी	..	13
38. छदाम की कौड़ी	..	14
39. आपसी विवाद	..	14
40. अंधा वैरागी	..	15
41. कृपण और कलावंत	..	15
42. बहरा गड़रिया	..	15
43. दिल्ली के बाँके	..	16
44. कौए का गुन	..	16
45. फूलों की सेज	..	17
46. विद्या का बल	..	18
47. सौ सियाने	..	18
48. भलमनसात और कृतज्ञता	..	19
49. ग़रीब का ईमान	..	19
50. अकबर और बीरबल	..	20
51. तुक न मिली	..	21
52. बड़ा मसख़रा	..	21
53. मथुरा के चौबे	..	22
54. जातीय पक्षपात	..	22

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठ संख्या

55. वैरी वेल .. 22
56. जज और गवाह .. 23
57. दीवानों का माल .. 23
58. बात की धुन .. 23
59. रिसाले का सम्मान .. 23
60. दिल की बीमारी .. 24
61. हकला थानेदार .. 24
62. सूत न कपास जुलाहे से लट्ठम लट्ठा .. 24
63. ज़मींदार का ग़ुलाम .. 25
64. दुआ माँगना .. 25
65. योग्य मौलवी .. 25
66. मौलवी साहब की खीर .. 26
67. वहिरे के भंटे .. 27
68. अंधा और अधेला .. 27
69. क्रोधी अंधा .. 27
70. काने की शर्त .. 27
71. मुफ्तख़ोरे .. 28
72. दिल्लगी की बातें .. 28
73. अचूक जवाब .. 28
74. हैवान .. 28
75. तीन अहमक .. 29
76. वेवकूफ़ .. 29
77. अफ़ीमची .. 29
78. बीबी दौड़ मैं सारा खुला .. 29
79. अरी तू उन जा .. 30
80. अमृत की बर्षा .. 31
81. जैसा बाप वैसा बेटा .. 31
82. गधे और घोड़े की पहचान .. 32
83. देवता के वरदान .. 32
84. झूठ की रफ़्तार .. 32
85. चुटकिले .. 32

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठ संख्या

86. सौदागर का भाग्य .. 33
87. पगड़ी की धौल .. 33
88. नाप के जूते .. 33
89. बहुत चूके .. 33
90. पाचन शक्ति .. 34
91. बहुभाषी .. 34
92. पाप का आकार .. 34
93. हाज़िर जवाब .. 34
94. ड्यूक आव अरगाइज .. 35
95. कंजूस की उदारता .. 35
96. भेद .. 35
97. खुशामद .. 35
98. मुँहतोड़ जवाब .. 36
99. अद्भुत संवाद .. 36
100. लाला साहब का रमचेरा .. 36

परिशिष्ट ..37–45

1. संदर्भ .. 37
2. शब्दार्थ और मुहावरे .. 40
3. लेखक परिचय .. 44

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संकलन

कहानी लड़कों और मेंढकों की

एक छोकरों का टोल किसी वड़ी झील के तीर, जहां वहुत से दादूर रहते थे, अचानक खेलने के लिए आ निकला. और खेल उनका छूछ्ली का था; जो लगातार कत्तले पानी में फेंकते थे, इस से उन अधीन डरे हूए मेंढकों को अधिक दूख और खेद पहूँचता था. अन्त एक दादूर जो सवसे ढीठ था, सिर नीर से निकाल बोला; हैं हैं हे प्यारे लड़कों, **तूम** अव हीसे अपनी जात की खोटी चाल क्यों सीखते हो ? मैं गिड़गिड़ाकर कहता हूं, **तूम** इसे विचारो तो सही, कि तूम्हारे ढिग तो यिह खेल है, पर हमारी मृत्यू है.

सिद्धांत, और के सूख चैन जाने में
हंसनी और अनीत और अमानसी है.[1]

कहानी पहाड़ की जिस्को जनने की पीर उठी

एक समै किसीनगर में चर्चा फैली कि उस्के पड़ोस के पहाड़ को प्रसूति की पीर हूई; और कहते हैं कि अति आहकर कराहने का शब्द उस्से सुना जाता था; और सब् की ध्यान उसी पर थी कि कुछ अनूठी वस्तु छिन एक में प्रकट होगी. अधिक चाव से लोगों की भीड़ उस नए कौतुक के देखने को इक्ट्ठी थी; एक तो ताक रहा था कि कोई दैयत जन्मेगा; दूसरा इस बात पर कि कोई अद्मूत राच्छस होगा; परन्तू सव इसी आस में थे कि कूछ अनूठी अचरज दिखाई देगा, निदान अति वाट देखते और अधिक अस्थिरता के पीछे क्या देख्ते हैं कि एक चूही भई.

सार, अनहोनी आस रखावनी होनहार पर हंसावना है.[2]

मुँह ढाप के सो रहो

ऐक कायस्थ और उसका गुलाम दोनों एक घर में सोते थे—लाला ने कहा—रामचेरा ! देख तो पानी वरस्ता है या खुल गया—उसने कहा वरस्ता है। पूछा—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तू किस तरह जानता है—तैं तो पड़ा सोता है—कहा बिल्ली आई थी—उस को मैं ने टटोला था—भीगी थी। कहा चराग़ बुझा दे—कहा—मुंह ढांप के सो रहो—अंधेरा हो जाएगा। फिर कहा—दरवाज़: बंद करदे—कहा भैया जी! दो काम हम ने किये—ऐक काम तुम करो। ग़रज़ ऐसा हुज्जती और सुस्त था कि आख़िर न उठा—पड़ा पड़ा जवाब देता रहा।[3]

मालिक और ग़ुलाम

ऐक मुसलमान बीमार था—ग़ुलाम से कहा कि फ़लाने हकीम के पास जाकर दवा ला—उस ने कहा—शायद हकीम जी इस वक़्त घर में न होवें कहा—होंगे—जा—तब उस ने कहा—अगर मुलाक़ात भी होवे—लेकिन दवा न दें—तद कहा—रुका: हमारा ले जा—अलबत्त: देंगें—फिर कहा कि जो उन्हों ने दवा भी दी—अगर फ़ाइद: न करे। कहा ऐ कमबख़्त! यहीं बैठा तमहीदे बांधा करेगा या जाएगा! कहा साहिब फ़र्ज़ किया कि अगर फ़ाइद: भी करे तो हासिल क्या—आख़िर एक दिन मरना बरहक्क़ है—जैसा अब मरे तैसा तब मरे।[4]

मुग़ल की जामनें

ऐक मुग़ल ताज: विलायत हिंदूस्तान में आया था—इत्तिफ़कन कहीं सब्ज़ी मंडी में जा निकला। वहां ऐक कुंजड़ी टोकरी में जामनें लिये बेचती थी—मुग़ल ने पूछा—ऐ कुंजड़ी! ईं में व: चि नाम दारद। बोली मिर्ज़ा जी! इनको जामनें कहते हैं मुग़ल के पास पैसा न था जो लेकर खावे—सूरत उनकी याद रखी—फिरते फिरते किसी बाग़ में आ निकला—ऐक जामन के दरख़्त नीचे कई ऐक जामनें पड़ी थीं और दो चार भौंरे भी—यिह लगा उन्हें चुन चुन खाने—साथ ही भौंरों को भी लगा चबाने—जब मुंह में कचर कचर लगे करने—मुग़ल बोला तुम चीं करो ख़्वाह पीं—में काला काला एक बी न चोरूंगा।[5]

किसी का मुँह चले किसी का हाथ

ऐक भाट ऐक लुहार को गालियां देता था—उसने उसको ख़ूब सा मारा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वुह कोतवाल के यहां नालिशी हूआ——उसने पूछा कि किस वास्ते मारा है । वोला वुह मैं ने गाली दी थी——तव कोतवाल ने कहा यहां से जाता रह——क्या तू ने यिह मस़ल नहीं सुनी । किसी का मुंह चले किसी का हाथ ।[6]

जिसकी लाठी उसकी भैंस

ऐक अहीर ऐक भैंस लिये चला जाता था । शहर के वाहर मैदान में ऐक ज़मींदार हरामज़ाद: ऐक लाठी लिऐ खड़ा था——इसने उसे तनहा देखकर धमकाके भैंस छीन अपने घर की राह ली! थोड़ी दूर गया था कि ऐक ने पूछा कि तू इसे कहां से लाया यिह तो ऐक मुसाफ़िर के पास थी । वुह बोला——क्या तुम ने यिह मस़ल नहीं सुनी है । जिसकी लाठी उसकी भैंस ।[7]

दाता के तीन गुन

ऐक फ़क़ीर ने ऐक दौलतमंद से सुवाल किया उसने ऐक रोपया दिया——जव वुह लेके चला तव उसे बुलाके रोपया छीन लिया——फ़क़ीर कहने लगा——बाबा यिह क्या तू ने आप ही दिया आप ही छीन लिया उस ने कहा साईं ! यिह मस़ल नहीं सुनी है । दाता के तीन गुन——दे——दिलावे——देके छीन ले ।[8]

किसी का घर जले कोई तापे

किसी मोची का घर जाड़े के मौसम में जलने लगा——ऐक ग़रीब पड़ौसी वहां आकर सेंकने लगा——यिह हालत देखके ऐक ठठोल ने कहा——क्या ख़ूब ! किसी का घर जले कोई तापे ।[9]

पड़िया मोल भैंस घतौना

ऐक सिपाही ने वाज़ार से कुछ चीज़ मोल ली और ऐक चीज़ उस से बेशक़ीमत उठा के ले चला । उसके मालिक ने कहा——इसे क्यूं लिये जाते हो । कहने लगा——

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसकी रूकन में—वुह बोला कि तुम्हारी वुही नक़ल है। पड़िया मोल भैंस घतौना ।[10]

मच्छर और हवा

ऐक दिन मच्छरों ने हज़रत सुलैमान पैग़ंवर से नालिश की कि हवा हम को वहुत सताती है—रहने नहीं देती। पैग़ंवर ने इस वात के सुनते ही हवा को बुलाया—उसके आते ही मच्छरों ने अपनी अपनी राह ली। जव हवा हज़रत से रुख्सत हूई—फिर मच्छरों ने आकर दाद वेदाद की। हज़रत ने फ़र्माया कि उस के आतेही तुम सव भाग जाते हो—वग़ैर मुक़ाविले दोनों के अदालत क्यूंकर करूं ।[11]

बादशाह का न्याय

ऐक वादशाह ने तीन शखस को बुलाकर पूछा कि तुम क्या काम करते हो। ऐक ने कहा कि मैं चोर हूं—चोरी ख़ूव करता हूं। दूसरे ने कहा कि मैं शराबी हूं—शराब ख़ूव पीता हूं। तीसरे ने अ़रज़ की कि जहांपाह ! में जुवारी हूं जुवां ख़ूव खेलता हूं—अगर फर्माइये तो एक दाओ में आपकी सारी सलतनत को लगा दूं—वादशाह ने चोर और शराबी की जां वख़शी की—और उस जुवारी की गरदन मारी ।[12]

राम भरोसे बैठकर सब का मुजरा ले

एक राजा ने किसी कंगाल व्रह्मन से पूछा कि मुझे और तुझे भोजन और कलेवा कौन करवाता है—उसने जवाव दिया कि परमेश्वर। फिर पूछा कि इसका क्या सवव है जो मुझ को इस ज़ियादती से और तुझ को ईस कमी से। वाह्मं बोला—महाराज ! यिह दोहा क्या तुम को नहीं पहुनचा। राम झरोखे वैढ़ेकर सव का मुजरा ले। जेसी जाकी चाकरी वेसो वा को दे ।[13]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा और ज्योतिषी

एक राजा ने अपना लड़का किसी जोतकी को सौंपा जो इसे जोतिक सिखओ—जव उस में यिह पूरा हो तो मेरे पास लाओ। पांडे ने वड़े प्यार और दुख से जितनी वातें उसकी थीं सो उसे अच्छे ढव से सिखाईं। जव देखा वुह लड़का वड़ा गुनी हूआ—तव राजा के साम्हने जाकर कहा—महाराज ! आप का बेटा अव जोतिक में चौकस हूआ—जव चाहिये उसे जांच लीजिये राजा ने यिह सुनतेही कहा—अव ही बुलाओ—लड़का आया और हाथ जोडके खड़ा रहा। राजा ने अपने हाथ की अंगूठी मुटठी में लेकर पूछा कहो बेटा ! हमारे हाथ में क्या है ! उस ने कहा—कुछ गोल गोल सा है जिसमें छेद और पतथर भी है। महाराज ने कहा—उसका नांव क्या है। बोला चक्की का पाट। तव राजा जोतकी के मुंह की ओर ताकने लगा—वुहीं वुह हाथ जोड़कर बोला। महावली गुन का कुछ दोस नहीं—यिह मत की चूक है।[14]

मिर्ज़ा साहब का पनीर

नक़्ल है कि नादिर शाह जव शाहजहानावाद में दाख़िल हुआ तो उसकी फ़ौज में से कितने मुग़ल शहर की सैर को आए। ऐक उन में भूखा था—इत्तिफ़ाक़न किसी साबुनगर की दूकान में साबुन के वड़े वड़े डले नज़र आऐ—कहने लगा—अर्ज़ चकतीहाऐ पनीर यके ज़ूद वमन यिह कि बिसियार गुरसतः अम। साबुनगर बोला आग़ा स़ाहिब ! यिह साबुन है—पनीर नहीं। तव झुंझलाकर मुग़ल ने कहा कि क़ुर्रुमसाक़। ग़लत मेगोई—वियार। जव उसने देखा कि यिह अ़क़्ल का अंधा मानने का नहीं। ऐक डला साबुन का हवाले किया—उसने एक वड़ा सा टुकड़ा तोड़कर मुंह में डाल लिया—सारे होंट फट गऐ जीव तड़क गई—तव घवरा के कहने लगा—अै वाऐ वाऐ। दहनम सोख़्तः शुदा सव वाज़ारी हंस ने लगे और उनसे कहा—क्यूं मिर्ज़ा स़ाहिव। इस पनीर का मज़ा तो ख़ूव चक्खा। निदान शरमिंदः हो गरदन नीची किये चला गया।[15]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बादशाह इब्राहिम

इवराहीम अदहम वादशाह ने ख़्वाव देखा कि ऐक शख़्स कोठे पर कुछ ढूंढता है। पूछा कि ऐ अज़ीज। तू क्या ढूंढता है। कहा—मेरा ऊंट खोया गया है। वादशाह ने कहा—तू क्या अहमक़ है—जो वलाख़ाने पर ऊंट ढूंढता है ! उस ने कहा—बेवुक़ूफ़ तू है—जो वादशाहत में खुदा को ढूंढता है। कहते हैं कि उसी रोज़ से वादशाह ने सलतनत छोर कर फ़क़ीरी इख़तियार की।[16]

रुपयों का तोड़ा

एक सीस रोज़गार के वास्ते अपने शहर से किसी मुल्क को चला—राह में एक कूए पर बैठ कर कहने लगा कि ऐक खांऊ कि दोनों ! इत्तिफ़ाकन् उस कूए में दो परियां रहती थीं—इन्हों ने यिह जाना कि कोई राकस है—हमें खाया चाहता है—इस दहशत से एक एक तोड़ा रोपओं का लाईं और उस मुसाफ़िर के साम्हने रख गईं—वुह माल मुफ्त लेकर अपने घर शौक़ से चला गया।[17]

काज़ी का घर

ऐक ग़रीव भूखा क़ाज़ी के यहां गया कहने लगा—मैं भूखा हूं—कुछ मूझे दो तो मैं खाऊं। क़ाज़ी ने कहा कि यिह क़ाज़ी का घर है—क़सम खा और चला जा।[18]

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी

ऐक ग़रीव मुफ़लिस ऐक दिन अपने यारों से कहने लगा कि मैं अगर वादशाह होऊं तो तुम सव आशनाओं को वड़ा आदमी करुं उन में से ऐक बोल उठा—कि न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।[19]

टेढ़ी खीर

एक बेवकूफ़ ने अंधे से पूछा कि तुम खीर खओगे। उसने कहा—खीर कैसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होती हे। कहा सुफ़ैद होती है। फिर उस नाबीना ने पूछा—सुफ़ैद कैसा होता है। तब उस शख़स ने कहा जैसा बगला। अंधे ने कहा बगला कैसा होता है। उसने अपना हाथ टेढ़ा करके कहा—ऐसा होता है। अंधे ने टटोलकर कहा—कि ऐसी खीर न खा सकूंगा—हलक़ में फंस जाए तो मर जाऊंगा।[20]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आप डूबे तो जग डूबा

नक्ल है कि ऐक डानडी दरिया में डूवता था—कई आदमियों को किनारे पर देखकर—लगा पुकारने कि अरे यारो ! मुझे निकालो—नहीं तो जग डूवा। लोगों ने इस डर से उसे निकालकर पूछा कि जहान क्यूंकर डूवता। उसने कहा कि तुम बड़े बेवुक़ूफ़ हो—क्या तुमने यिह मसल भी नहीं सुनी है ! आप डूबे तो जग डूवा ।[21]

अमीर की सवारी

एक कमवख्त ख़ुरासान के चौक में वास्ते गदाई के गया था—इतने में किसी अमीर की सवारी बड़ी धूम धाम से निकली। उस ने लोगों से पूछा कि यिह कौन है—जो इस शान से आता है। ऐक राही ने कहा कि यिह बंदऐ वादशा ही है। उस ग़रीव ने आसमान की तरफ़ सिर उठाकर कहा कि ऐ खुदा ! बंद: परवरी इस वादशाह से सीख कि हम मुंहताज न हों ।[22]

गुलाम की मजबूरी

ऐक ग़ुलाम जाड़े के मौसिम में अपने मियां के पीछे मारे सरदी के कांपता चला जाता था—ऐक भले मानुस ने उसे देखकर कहा कि तू जो इतनी ठंड खाता है—अपने मियां से क्यूं नहीं कहता। वुह वोला क्या मियां के आंके नहीं हैं जो मैं कहूं ।[23]

बीबी रांड हुई

ऐक भला आदमी कहीं नौकर था—वहुत रोज़ गुज़र गऐ थे कि घर की कुछ ख़वर न ली थी। तव उसकी बीबी ने इन्तिज़ारी खैंचकर ऐक आदमी को भेजा—ख़फ़गी के मारे कह दिया कि मियां से कहना कि बीबी तुम्हारी रांड़ हूई। उसने जाकर यिही कहा—यिह ख़वर सुनकर रोने लगा। जो लोग वुहां हाज़िर थे—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूछने लगे—कहो साहिब ! क्यूं रोते हो ! कहा क्या बतावें—जोरू रांड़ हूई। उन्हों ने कहा तुम तो जीते जागते बैठे हो जोरू रांड़ किस तरह हूई—कहा सच है—लेकिन घर का आदमी आया है—झूठ नहीं कहेगा।[24]

राही की सीख

ऐक राही ने ऐक को पूछा अगर कोई ऊंचे से गिरे तो क्या हो। कहाकि ऊंचे का गिरा सम्भल सकता है—नज़रों का गिरा हूआ नहीं सम्भल सकता।[25]

दुधेल गाए

ऐक बड़े आदमी की यिह ख़ो थी कि जब अपने नौकरों पर ख़फा होता तो उन्हें ख़ूब मारता—फिर बअद दो चार घड़ी के हर ऐक को पांच पांच सात सात रोपऐ देता। ऐक रोज़ उसने अपने आदमीयों को मारा ऐक ने उन्ह आदमीयों से कहा कि तुम जो हमेश: मार खाते हो—क्या तुमहें और कहीं नौकरी नहीं मिलती। उनमें से ऐक बोल उठा कि तुम ने यिह मसल नहीं सुनीं। दुधेल गाऐ की दो लात भी भली।[26]

खोटे पैसे का मूल्य

ऐक बुडढा लोहे का पैसा हाथ में लिये चला जाता था—ऐक ने पूछा कि तेरे हाथ में क्या है। उस ने कहा—खोटा पैसा है—वुह बोला कि अगर खोटा है तो तू उसे फेंक क्यूं नहीं देता—कहने लगा—तुम ने यिह मसल नहीं सुनी है। खोटा पैसा खोटा बेटा वक़्त पर काम आता है।[27]

पुण्य का फल

कोई समय एक राजाने अपने सेवकको बुलाया और उससे उत्तर नहीं पायके अपने घरका द्वार खोला, और देखाकि एक बालक अपना सेवक सो बड़ी नींदमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूता है। और उसीको जगावने के लिये उस्के समीप आयके देखा, कि वालककी जेवसे एक चिट्ठी जिस् पर कुछ लिखा है, और उस्का कुछ वाहिर होके रहा है। तव चिट्ठी में क्या लिखा है, यह जानने के लिये राजाकी इच्छा भई। इस् कारण उस्को निकालके पढ़ने लगे, तव समझा कि पत्र वालककी माताने वालकको भेजा है, तिस्का अर्थ यही, हेमेरे प्यारे बेटे, तुम्ने मेरा दुःख दूरकरनेके लिये अपनी कमाइका कुछ भेजनेसे अपने पर दुःख लिया है। यह तुम्हारी दया मैंने मानी, और भी तुमको मा वाप पर वड़ा स्नेह है इस्में मैंने जाना; इस्का फल परमेश्वर तुजको अवश्य दैंगे। राजा इस् पत्रको पढ़के घरमें फेर गया, और कै एक मोहर पत्रे में लपेटके उसी को वालककी जेवमें फेर रख दिया। पीछे ऐसे ऊंचे करके पुकारा, कि वालककी नींद खुल गई। राजाने कहा, क्या तुजको वड़ी निद्रा भई थी ? तिस्में वालक उत्तर क्या देगा, सो विचारके ठहराने सका नहीं। तव अपनी जेवमें हाथ देके खोलके देखा, कि उसी चिट्ठी के सङ्गमें कितनी एक मोहरे हैं। यह देखके वालकको वड़ा आश्चर्य्य भया, और वहुत भावना करके इन् मोहरन् समेत राजाके चरणपर गिरके वहुत रोने लगा। राजाने पूछा तुम क्यौं रोते हौ ? तिस्में वालक व्याकुल होके राजास कहने लगा, कि हेमहाराज किस्ने हमारे सर्वनाश की इच्छा किई है, मैं इन मोहरन् के बिषय में कुछ नहीं जानता हूं। राजाने उस्को अभय दान देके कहा, कि हे सुशील वालक तुम्हारी सुकृतिके फल देने के कारण परमेश्वरने तुम्को ये मौहरैं दिई हैं। तुम् अपनी माताके पास इन्को भेज दो, और उस्को जनाओ कि मैं अपने पर तुम्हारा और तुम्हारी माका बोझ लेऊंगा।[28]

अफीमची राजपूत

कोई राजपूत वहुत अफीम खाता था; दैवी उसे बिदेश जाना पड़ा, और किसी अड्डे में जाकर उतरा. वहां के लोगों ने आकर इस से कहा, कि ठाकुर साहिव ! यहां चोरी वहुत होती है, आप चोकसी से रहियेगा. यह वात सुनकर रात तो उसने जागकर काटी, पर यह वात जी में रखी, कि चोरी वहुत होती है, भोर होते ही घोड़े की पीठ लगा; एक नगर के बीच चला जाता था, कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकाएकी पीनक से चौंककर पुकारा, अरे रमचेरा ! अरे रमचेरा ! घोड़ा कहां ? वह बोला, महाराज ! घोड़े पै तो बैठे ही जाते हो, और घोड़ा कैसा ? कहा, बेटा ! इस बात की कुछ चिंता नहीं, पर सावधान रहना अच्छा है.[29]

नौसिखिया घुड़सवार

एक कायथ घोड़े पर बैठा हाट में चला जाता था; किसी घुड़चढ़े ने उसे मेंडकी से भी पीछे हटा बैठा देख के कहा, भैया जी ! कुछ आगे हठ बैठो. बोला, क्यों ? कहा, आसन खाली है. फिर उस ने उत्तर दिया, क्या तुम्हारे कहे से हठ बैठेंगे ? जैसे साईस ने बैठा दिया है, तैसे बैठे चले जाते हैं.[30]

दुख सुख प्रतिदिन संग है

एक साहूकार पोतड़ों का रज्जा समय के फेर में पड़ अपना धन सब खो बैठा; और लगा निपट दुख पाने, और उपासा रहने. निदान उसके जी में यह सोच आया, कि जो मैं किसी महापुरूष या सिद्ध के पास जाऊं तो यह दुख मिटे; क्यौंकि सुना भी है, साध के दर्शन से व्याधि जाती है. यह विचार चला चला एक जोगी के पास गया; यह उस से कुछ न कहने पाया, कि उसने अपने जोग से इसका मनोरथ जान करके कहा, (दोहा) सुख दुख प्रति दिन संग है मेट सके नहिं कोय, जैसे छाया देह की न्यारी नेक न होय. यह उत्तम उत्तर पा, वह विचारा धीरज धर अपने घर आया.[31]

आपस की फूट

एक जमींदार के दो बेटे; पर उन दोनों में सदा अनबनाव रहता, एक एक को न देख सकता, जब उन का बाप मर गया, वे दोनों आपस में लड़ने लगे. निदान बड़े भाई ने छोटे को ज़मींदारी से निरधिकारी कर मारके निकाल दिया; तब वह किसी और बड़े ज़मींदार को अपने बड़े भाई पर चढ़ा लाया. उस ने आते ही खड़ी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सवारी उसे मार लिया, और सारी ज़मींदारी को अपने हाथ में किया; जो चढ़ा लाया था, विसे कुछ खाने को कर दिया. यह वृतान्त देख किसी ने तुलसीदास गोसाईं के आगे जाकर कहा, कि महाराज ! संसार के सुख के लिये, और कई दिन के भोग के हेत, उस ने भाई को मरवाया, और इह लोक और परलोक को गंवाया इस में उस के हाथ क्या आया ? जव भाई भाई से यह व्यौहार करे, तव दूसरे से कोई क्या भरोसा रखे ? तुलसीदास जी बोले, कि इस का अचरज मत करौ, ऐसे और भी ठौर कहा है; वधिक वध्यौ मृग वान तें रुधिरौ दियौ वताय, अति हित अनहित होतु है तुलसी दुरदिन पाय.[32]

बनिया बटोही

कोई वनियां वटोही वाट भूलके एक वन में जा निकला; विसे वहां और तो कोई न सूझ पड़ा, पर एक जोगी दिखाई दिया; इसने उसे दंडवत करके पूछा, नाथ जी! आते हो कहां से, और जाओगे कहां ? उत्तर दिया, वावा ! हिंगलाज ज्वालामुखी हरिद्वार कुरुक्षेत्र करके आता हूं, और काशी हो गंगा गोदावरी का मेला कर सेतवंध रामेश्वर को जाऊंगा. वनिये ने कहा, महाराज ! एक वात पूछूं जो क्रोध न करो, वोला, वावा ! एक नहीं, दो, कहा, महाराज ! हम गृहस्त्री है; जो देस देस फिरें तो कुछ दोष नहीं; आप फ़कीर हो भटक भटक क्यौ भरम गंवाते हो ? एक ठौर वैठकर किस लिये अपने भगवान का ध्यान नहीं करते ? कहा, वावा ! तूने यह कहावत नहीं सुनी ?

वहता पानी निरमला वंधा गंधीला होय ।
साधू जन रमता भला कालख लागे न कोय ।।[33]

बनारसी चौबे

वनारस में एक चौवे ने किसी स्थान पर कितने एक विद्यार्थियों को हिल हिलकर पढ़ते देख किसू पंडित से प्रश्न किया,

झुकत झुकत विद्यारथी कहा वूढ़े कहा वार,
मैं तोहि पूछूं हे सखे ! याकौ कौन विचार ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर दिया,

आगे समद अगम्य है अपने बैठ करार
रतन लैंन को झुकत हैं झिझकत देख अपार.[34]

बस्ती का मुल्ला

पठानों की किसी बस्ती में एक मुल्ला था, जो कुछ फ़ातिहः दरूद का उन्हके काम होता, उसको बुला लेते, और अपना काम करवा लेते. इस में शुबे रात जो आई, तो हरएक के घर से उसे बुलाहट हूई तब उसके किसी मित्र ने पूछा, कि कहो मित्र ! आज तुम अकेले क्या करोगे ? और किस प्रकार घर घर फ़ातिहः पढ़ोगे ? बोला, भाई ! मुझे फ़ातिहः पढ़ने से क्या काम ? मुरदः दोज़ख जाय या बहिश्त, मुझे अपने हलवे मांड़े से काम है.[35]

ढीठ बैरागी

किसी ठाकुरद्वारे में कई एक अताई चैन से बैठे गाय रहे थे, और बहुत से लोग खड़े सुनतेथे. इसमें एक ढीट बैरागी आया, और उनके हाथ से तंबूरा ले, सब के बीच में बैठ, लगा बेसुरा हो गाने, उसका खटराग सुन सब उदास हूए; पर कोई कुछ न बोला. निदान एक चौबे खड़ा सुनता था, उस ने कहा, बाबा जू ! बस करौ, बस करौ, बहुत गाये. बैरागीने खिजला के उत्तर दिया, महाराज ! मैं तो अपने ठाकुर को रिझाता हूं, और कोई रीझा तो क्या ? और न रीझा तो क्या ? चौबे बोला, सारे ! मोकौं तौं रिझाय ही न सक्यौ, कहा ठाकुर मोहूं सों कूढ़ है जो रिझाय लेगौ ? यह सुन वह लज्जित हो चुपचाप उठकर चला गया.[36]

मियां की डाढ़ी

एक सिक्षक किसी गांव् में कितने एक लोगों को सिक्षा देता था, इसमें कोई गंवार भी वहां आ बैठा, और लगा उसका मुंह देख देख बेचैन हो रोने. इस को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रोता देख सवने जाना कि यह कोई वड़ा कोमल सुभाव है जो इतना रोता है. एक ने इस से पूछा, कि भाई ! सच कह, तू जो इतना रोता है, तेरे मन में क्या आया है ? सिक्षक को उंगली से वता वोला, कि इन मियां की डाढ़ी हिलती देख मुझे अपना मुआ हूया प्यारा वकरा स्मरन आया, कि जव न तव उसकी भी इसी भांत डाढ़ी हिलती थी, इस लिये मैं रोता हूं, यह सुन सव खिलखिला उठे, और सिक्षक लज्जित हो चुप रहा.[37]

छदाम की कौड़ी

किसी गांव में एक लड़का छदाम की कौड़ी ले भड़भूजे के भाड़ पर गया. उसने कौड़ी ले चवेना तोल दिया; इसने खंभे को घपची में कर दोनों हाथ वढ़ा लेते तो लिया, पर हाथ न निकाल सका, तव रोने लगा; उसका रोना सुन वहुत से लोग वहां इकठे हूए, और हाथों में खंभा देख व्याकुल; किसी की वुद्धि कुछ काम न करती थी. निदान एक ने उनमें से कहा, कि भाई! लालवुझक्कड़ आवे तो यह लड़का वचे, नहीं तो इसका वचना कठिन, यह सुन कोई उसका अपना लालवुझक्कड़ को वुला ही लाया, और आते ही विन्हों ने देखकर कहा, कि

बूझे लालवुझक्कड़ा और न वूझे को,
छान वलेंडा दूर कर इसे ऊपर कर लो.[38]

आपसी विवाद

किसी तीरथ के निकट एक मठ में कितने एक उदासी रामावत नीमावत नानकपंथी दादूपंथी सन्यासी वैठे आपस में मत का विवाद कर रहे थे. कोई किसी की वात न मानता था, अपने अपने पंथ की चौड़ाई वड़ाई करते थे. निदान झगड़ते झगड़ते तूंबे खप्पर फूटने की दशा पहुंची; इसमें एक अवधूत वोला, साधो ! क्यों लड़ मरते हो ? इस दोहे के अर्थ को तो समझो;

घर घर में मूरत वही लाल जो नहीं विवेक
जैसे फूटी आरसी खंड खंड मुख एक.[39]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंधा वैरागी

एक अंधा वैरागी काशी के बीच मनिकर्निका घाट पर बैठा गहन में दही पेड़ा खा रहा था कि देख कर किसी पंडित ने पूछा सूरदास जी ! यिह क्या करते हो ? बोला, महाराज ! दही पेड़े खाता हूं कहा, गहन में ? जवाब दिया बावा ! मेरे गुरू की दया से सदाही गहन है यह सुन पंडित हंस कर चुप हो रहा.[40]

कृपण और कलावंत

एक बड़ा मानुस बड़ा कृपन था कि कभी जूठे हाथ से कुत्ता भी उसने न मारा था, और खाने खिलाने की तो क्या बात ! एक दिन कोई कलावंत भूला भटका उसके यहां जा पहुंचा, और उसे धनवान जान तंबूरा मिला अच्छा गाया, और उन्ने रीझकर सराहा. इतने में रसोइये ने आ निवेदन किया, महाराज ! रसोई हुई है. बोला, मेरा सिर पिराता है, अभी रहे, एक नींद लेकर खाऊंगा, यह छलकर मुंह ढक सो रहा, और कलावंत भी उस के कपट करने का आशय बूझ खटिया तले पांयते लेट रहा. पहर एक के पीछे भगवान ने किसी अपने भृत्य से पूछा, कि अरे ! वह जंजाल गया ? इसमें कलावंत ने उत्तर दिया, कि वलैया लेऊं, यह आपदा तो चरनन लगी है, बिन खाना खाये कब जाती है ? इस रहस को समझ प्रसन्न हो उसने इसे अपने साथ खाना खिला, कुछ दे विदा किया.[41]

बहरा गड़रिया

एक बहरा गड़रिया जंगल में अपनी भेडें चराता था, दैवी उसकी एक भली भेड़ खोई गई; तव उस ने एक लंगडी भेड़ की ओर देखकर कहा, कि जो वह मिले तो इसे मैं किसी को भगवान के प्रीतार्थ दूंगा, इतना कहते ही भेड़ मिली; तद वह लंगड़ी भेड़ का कान पकड़ किसी को देने ले चला; इस में सोंहीं से एक और बहरा आया, इस ने विस से कहा कि यह भेड़ तू ले. वह बोला, राम दोहाई, मैंने इसकी टांग नहीं तोड़ी. निदान यही कहते कहते दोनों हाकिम के यहां गये; हाकिम बहरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था, और अपने घर में किसी से रोसकर वैठा था; इन्हें दूर से आते देख उन्ने अपने जी में जाना कि कदाचित ये विस़ का संदेसा लिये आते हैं. यह इतना कह अपने घर भीतर भाग गया, कि उस दुष्ट की वात मैं कभी न सुनूंगा.[42]

दिल्ली के बांके

दो दिल्ली के वांके विराने माल के उड़ाने खानेवा़ले किसी स्थान से यह विचार करके उठे, कि आज वाजार में चलकर विन कौड़ी पैसे मुफ्त की मिठाई खाया चाहिये; और आगे पीछे हो वाजार में पहुंचे एक तो जाते ही रुपये की मिठाई तुलवा़, लगा हलवाई की दूकान पर बैठ खाने; और दूसरे ने उसी हलवा़ई से आठ आने की मिठाई, और अधेली के टके ले अपनी वाट ली. हलवा़ई ने दौड़कर उसका कपड़ा पकड़ा, और कहा, मेरा रूपया दो. वह़ वोला, मैं दे चुका हूं, इस में दोनों से झगड़ा होने लगा, और वहुत से लोग इकटे हो गये. तव उस वांके न कहा, कि मैं एक भले मनुष के देखते इसे रूपया दिया है, न माने चलकर पुछवा़ दूं. लोगों ने कहा, अच्छा तो कहता है, तू दूकान पर क्यों नहीं ले जाता ? लोगों के कहे सुने से हलवा़ई ने दूकान पर जा, उस मिठाई खानेवा़ले से पूछा, कि अजी ! आप सच कहिये, इसने मुझे रूपया कव दिया है ? वह़ वोला, अवे ! इन्होंने रूपया मेरे देखते दिया है; पर कहीं मेरा रुपया न भूल जैयो. यह कह, व़े दोनों उसे निर्वोध वना, मिठाई खा चले गये, और वह़ विचारा रो झींककर वैठा रहा.[43]

कौए का गुन

शाहजहां वादशाह के शाहज़ाद: दाराशिकोह को चिड़ियाओं की वड़ी चाह थी. एक दिन आज्ञा की, नगर में डोंडी फेर दो कि जिसके यहां जो जंतु आखेटी उड़ने लड़नेवा़ला है लेकर कल भोर को हमारे यहां उपस्थित होय. इस आनंद संवाद के सुनते ही जितने नगर में सुघड़ थे, अपने अपने चिड़ियाओं को उड़ाय लड़ाय दौड़ाय वनाकर वड़े शिष्टाचार से ले गये, और कोई कुतूहली कौतूक देखने के लालच से एक क़ौवे को पिंजरे में वंदकर कई एक भारी मोल का ढपना उस पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाल उनके पीछे लिये चला गया वहां सब के जंतु खुले और दिखलाये गये : हर किसी ने अपने पंछी की प्रशंसा की, और पारितोषिक पाया. जब इसकी वारी आई तो यह अपने मन में घबराया निदान लोगों ने इस के हाथ से पिंजरा ले घटाटोप उतार कौवा शाहज़ादे को दिखाया; देखते ही हंसकर शाहज़ादे ने इस्से पूछा, कि अजी ! इन सब की चिड़ियाओं का गुन देखा और सुना, अब तुम अपनी चिड़िया का बखान करो, यह क्या गुन रखता है ? हाथ बांध खड़ा हो बोला, महाराज ! किसी का उड़ना लिया है, किसी का लड़ना, किसी का बोलना, किसी का दौड़ना; पर इस की ढिठाई ही ली है. इस अवसर की बानी से प्रसन्न हो दाराशिकोह ने सब के साथ उस को भी प्रसाद दिया.[44]

फूलों की सेज

सुनते है कि इबराहीम अदहम की सेज सवामन फूलों से संवारी जाती थी. एक दिन बांदी ने सेज बनाके अपने जी में विचारा कि इस बिछौने पर सोने से कैसा सुख जी को होता होगा ? यह सोच इधर उधर देख वह जो उस पर लेटी, तो सुख पाके बिभोल हो सो गई, और फूलों के बीच छिप गई. पहर एक पीछे बादशाह भी आ उसी पर लेट गया. घड़ी दो एक पीछे उस ने जो करवट ली, शाह घबराकर उठ खड़े हूए, और बोले कि देखो इस खाट में क्या आपद है ? एक के कहते दस दौड़े आये. और उन्होंने बांदी को निकाल बाहर किया. देखकर महाराज ने कहा, इस मुई को मेरे साम्हने सौ कोड़े मारो. बात के कहते ही लोगों ने बेपीर हो सौ कोड़े गिनकर लगाये; उसने पचास हंस हंसकर और पचास रो रोकर खाये. यह कौतुक देख बादशाह ने उसे पास बोलाकर पूछा, कि सुन तो ! मार खाने से मनुष्य रोता है, तू जो हंसी और रोई, इस का क्या कारन ? बोली, महाराज ! फूलों की सेज पर पहर भर सोने का दंड परमेश्वर के यहां न हो यहां ही हूआ, इस बात को सोचके मैं हंसी; और आप को परमेश्वर के यहां न हो यहां ही हूआ, इस बात को सोचके मैं हंसी; और आपको परमेश्वर के यहां इस सेज पर नित सोने का न जानूं क्या दंड होगा ? यह सोच करके रोई. कहते हैं, कि इबराहीम अदहम इस बात के सुनते ही राज छोड़ फ़क़ीरी ले जंगल को चला गया.[45]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विद्या का बल

लाड़ कपूर एक दिन अकवर वादशाह के सोंहीं अच्छा गाये; शाह ने रीझकर हाथी दिया, ये ले आये. वरस एक पीछे इन दोनों भाइयों के जी में आया कि आज हाथी का आहार चलकर देखें कितना खाता है, और किस प्रकार खाता है ? निदान आहार के समय मूढ़ा विछा विछा हाथी के पास जा वैठे, और उसका खाना देख निपट चकित औ सोच में हो आपस में कहने लगे, कि भाई, जी ! वादशाह ने यह हमारे पीछे कोई वड़ी विपत लगा दी न इसे वेंच सकें, न किसी को दे सकें; जो यह कई दिन यहां रहा, तो इसके खाने के आगे हमारा गाना वजाना सव मिट्टी में मिल जायगा. इतना कह, कुछ मन में समझ, ढोलक तंवूरा उसके गले में डाल छोड़ दिया, उन्ने नगर में जा धूम की. और नगर के लोगों ने जा वादशाह के यहां पुकारा की. शाह ने कहा, देखो किस का हाथी है ? किसी ने आ कहा, महाराज ! लाड़ कपूर का. आज्ञा की कि उन्हें वुलओ कहने के साथ ही वे आन उपस्थित हूए; देखते ही क्रोध कर महाराज ने कहा, कि क्यौं वे ! तुम ने हाथी क्यौं छोड़ दिया ? उन्होंने हाथ वांधकर कहा, महाराज ! हम को जो विद्या आती थी सो वरस दिन में सव सिखला, ढोलक तंवूरा उस के हाथ दिया, इस लिये कि वादशाही नगर है, इसमें जाकर कमावे, और कुछ विस में से आप खा हमें खिलावें. इस रहस्य के सुनते ही प्रसन्न हो वादशाह ने उनका अपराध क्षमा किया, और हाथी के लिए एक गांव दिया.[46]

सौ सियाने

एक दिन अकवर वादशाह ने वीरवल से कोई वात कहके उसका उत्तर पूछा. वीरवल ने वह उत्तर दिया कि जो वादशाह के मन में ठहरा था. सुनकर शाह ने कहा, कि यही वात मेरे भी जी में आई है, वीरवल वोला कि, महाराज ! यह वही वात है जो सौ सियाने एक मत. शाह ने कहा कि यह कहावत भी प्रगट है जो, सिर सिर अक़्ल, गुर गुर विद्या. फिर वीरवल ने कहा कि महाराज ! जी में आवे तो इस वात को जांच लीजे. कहा, वहुत अच्छा. इतनी वात के सुनते ही वीरवल ने नगर में से सौ वुद्धिवान वुला भेजे, औ दो पहर रात के समय वादशाह के सोंहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्हें एक सूना कुंड वताकर कहा, महाराज की आज्ञा है कि इसी विरियां हरएक लोग एक एक घड़ा दूध का भरकर इसी कुंड में ला डालें. वादशाह की आज्ञा को सुनते ही हरएक ने अपने जी में यह वात समझके कि जहां निन्न्यानवे घड़े दूध के होंगे, तहां मेरा एक घड़ा पानी का क्या जाना जायगा, पानी ही ला डाला. वीरवल ने शाह को दिखाया; शाह ने उन सब से कहा, तुमने क्या समझके मेरी आज्ञा को न माना ? सच कहो, नहीं तो भला न होगा. विन में से हर किसी ने हाथ वांध वांधकर कहा, कि महाराज ! चाहो मारिये, चाहो छोड़िये, हमारे जी में यह वात आई कि जहां निन्न्यानवे घड़े दूध के होंगे, वहां एक घड़ा पानी का क्या जाना जायगा ? यह वात सब के मुख से सुनकर वादशाह ने वीरवल से कहा, जो कानों सुनते थे सो आंखों देखा, कि सौ सियाने एक मता ।[47]

भलमनसात और कृतज्ञता

मिलान नगर में किसी घर में एक द्वारपाल था उस्ने दो सौ रूपयों की थैली पड़ी पाई, और उस्का समाचार लिखके प्रकाश किया, जिस्की वह थैली खोयी थी वह् समाचार पायके उसी घर में आया। और यह की थैली उस्की है इस्को अनेक प्रमाणों से निश्चय कर्के द्वारपाल ने थैली उस्को सौंप दिइ । तब वह जिस्की थैली थी वहुत प्रसन्न और कृतज्ञता से द्वारपाल को बीस मुद्रा परितोष लिये देने लगा, परन्तु द्वारपाल ने ग्रहण न किया—मुद्रा देने की इच्छा किई फेर पांच तौभी उस्ने उनको नहीं लिया, तिस्लिये वह मनुष्य थैली को भूमि में फेंक के क्रोध से कहने लगा, कि जो तुम् मेरे प्रत्युपकार के स्वीकार कर्ने में इच्छा नहीं करते तो मैंने कुछ भी नहीं खुवया ।—द्वारपाल ने पांच मुद्रा लेने की इच्छा किई, और उनके—उसी समय में लेके दरिद्री लोगों को वांट दिया ।

अएतव उपकार कर्नेसे कृतोपकारक का स्वीकार कर्ना साध्यानुसार प्रत्युपकार कर्ना महात्मा लोगों का निदर्शन ।[48]

ग़रीब का ईमान

एक धनी वड़े भोर को घोड़ेपर चढ़के नगर की प्रदक्षिण करता था। तिस समय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में उस्की अनजान में जेवसे कागज़ में मढ़ी सोलह् स्वर्णमुद्रा मार्ग में गिर पड़ी। एक दरिद्रीने उन्को पड़ी पायकर विचारकर्ता के पास अर्पण कर दिया, उस्ने समाचार के द्वारा यह् वात नगर में प्रकाश किई। तिस्से यह् धनी विचारासन के सम्मुख में आया, और विचारकर्ता ने उस्को कागज से मढ़ी स्वर्णमुद्रा समर्पण कर दिई। धनी ने कहा, कि "मेरी और भी अधिक मुद्रा थी अतएव जिस मनुष्य ने इन्को पाया है, उसीके पास अवश्य वेभी पाई जांयगी।" इस्में वही दरिद्री भय संयुक्त होके विचारकर्ता से यही विनति कर्के कहने लगा, कि "मैंने जो पाया था सो सव आपके पास लाय धरा है, मेरे पास और कुछ भी नहीं है।" पीछे जो कागज़ मढ़ा हुवा था, विचारकर्ता ने उसी कागज़ को मंगाय कर उस्में फेर मढ़के देखा कि सोलह् मुद्रा से अधिक उस धरता नहीं तव धनी से कहा कि "ये सोलह् स्वर्णमुद्रा भी तुम्हारी नहीं है, क्यौंकि इस्में और नहीं समावती है। तव तुम्हारी स्वर्णमुद्रा और किसी ने पाई होगी, और तुम् उनको अन्यत्र खोज करो।" तव दरिद्री से कहा, कि "यही सोलह् स्वर्णमुद्रा तुम्हारी हुई, तुम् इन्को लेके अपने घर को जाओ।"[49]

अकवर और बीरबल

एक दिन अक्वर वादशाह् ने बीर्बल से कहा तू मुझे चार मनुष ला दे सूर्बीर कायर लज्जावान और निर्लज्ज बीर्बल दूसरे दिन भोर ही एक रंडी को साथ अपने वादशाह् के सोंही ले गया शाह् ने पूछा लाया बोला महाराज उपस्थित है यह् कह् बीर्वल ने उस रंडी को वादशाह् के साम्हने ले जा खड़ा किया वादशाह् ने कहा अबे मैंने चार जना बुलवाये थे तू एक को लाया और तीन कहां है निवेदन किया महाराज इसमें चारों के गुन हैं आज्ञा की वखान कर बोला कि जिस काल यह अपने सुस्राल में रहती है मारे लाज के अच्छी भांति गला खोल्कर बोल्ती भी नहीं और जिस विरियां कहीं ब्याह् में गालियां गाती हैं तो वाप भाई स्वामी ससुर और सव कुटुम के लोग बैठे सुना कर्ते हैं पर यह किसी की कान नहीं कर्ती और जव अपने स्वामी के पास बैठती है तो रात को अकेली घर के कोठे में भी नहीं जाती और कहती है मुझे जाते डर लगता है फिर जिस समय किसी से इसकी आंख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लग्ती है तो निधड़क चली जाती है और चोर ग़वार भूत प्रेत परेत से नहीं डर्ती यह वात सुन वादशाह ने प्रसन्न हो बीर्बल को पारितोषिक दिया और कहा तू सच कहता है ।[50]

तुक न मिली

सूरजमल्ल के समय में किसी मुसलमान ने ठट्ठे से एक जाट से कहा, अबे जाट बे जाट तेरे सिर पर खाट, उसने कहा, अबे मियां बे मियां तेरे सिर पर कोल्हू, यह बोला तुक न मिली, उसने उत्तर दिया कि तुक न मिली तो कहा भयो बोझन लों मरैगो ।।[51]

बड़ा मसख़रा

एक बुंदेलखण्डी मुसाफिर एक गांव में पहुंचा वहां उस से एक मसख़रे से भेंट हो गई, मुसाफिर ने सोचा कि इस गांव के मालगुजार से मुलाकात करना चाहिये, ऐसा सोच उसने उस आदमी से पूछा क्यों भाई इस गांव का ठेकेदार कौन है ? मसख़रा बोला यहां ठेकेदार वहुत हैं, कोई ठेका रखाये है, कोई परवे रखाये है, ऐसे २ बहुत हैं; आप किस को पूछते हो, मुसाफिर बोला भाई हम यह नहीं पूछते—हम यह पूछते हैं कि इस गांव का अमली कौन है, मसख़रा बोला जनाव तुम्हारे तो अजीब सवाल होते हैं, अरे भाई यहां अमली वहुत हैं कोई भंग का अमली है, कोई गांजा का अमली है, कोई अफीम का और कोई शराव का ऐसे २ यहां हजारों अमली हैं, तुम्हें किसको वताऊं, मुसाफिर बोला तुम पूरे बेवक़ूफ़ हो, हमें यह वताओ कि इस गांव का ठाकुर कौन है ? मसख़रा बोला महाराज एक हो तो वताऊं यहां तो किसी के घर शालिग्राम हैं, किसी के घर श्री कृष्ण हैं किसी के घर महादेव हैं, ऐसे घर २ ठाकुर विराजे हैं, मुसाफिर तव खिसियाकर बोला क्या बेवक़ूफ़ से काम पड़ा है, अच्छा अव हमको वताओ कि इस गांव का राजा कौन है, मसखरा बोला भाई यहां घर २ के राजा हैं, कल एक कोरी मर गया तो उसकी औरत यह कह २ कर रोती थी कि हाय मोरे राजा हाय मोरे राजा, इससे मैं जानता हूं कि अपने २ घरके सव राजा हैं—यह सुन मुसाफिर समझ गया कि यह मसखरा है, हमारी वात का जवाव न देगा यह सोच उसने वहां से चल दिया ।[52]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मथुरा के चौबे

मथुरा के चौबे बड़े ठठोल होते हैं। एक दिन कोई चौबे हाट से मारू बैंगन मोल लाया, देख कर उसकी जोरू ने पूछा, कहो भरता करूं ? यह बोला मोतें कहा चूक परी ? उसने उत्तर दिया, लोग तुम्हें जोयसी कहते हैं, यह सुन चौबे निरुत्तर हुआ ।[53]

जातीय पक्षपात

एक रोज एक कायथ जो के किसी बड़े ओहदे पर थे, कहीं जा रहे थे बीच रास्ते में एक कैथ (कैथा) का दरख़्त लगा था नोकरों से पूछा यह कौन है; उन्होंने कहा लाला साहिब ये कैथ है यह सुन आप बोले ओहो ये तो हम जात है अच्छा इन से पूछो किस वास्ते रास्ते में खड़े हैं, नौकरों ने वात वनाकर कहा यह कहते हैं कि हम नंगे हैं और हमको जाड़ा लगता यह सुन आपने नौकरों को हुकम लगाया अच्छा इन को हमारे तोशकखाने से 25 थान रेशम के दे दो ।[54]

वैरी वेल

एक साहिव के यहां एक ख़ानसामा नौकर था खानसामा से और मेंमसाहिव से वड़ी दोस्ती हो गई, एक रोज़ खानसामा मेंमसाहिव का चूमा ले रहा था कि इतने में साहिव ने उसे देख लिया और मेंमसाहिव ने भी साहिव को आते देखा इस पर मेंमसाहिव ने खानसामा से कहा "डेखो हमारा साव टुम को चूमडे डेखा अव वड़ा मुशकल पड़ा" ख़ानसामा बोला मैंमसाहिव कुछ परवाह नहीं जव साहिव पहुंचे तो खानसामा ने तुरंत दुपट्टा शिर से उतार साहिव के पैरों पर रख दिया और कहा हज़ूर की नौकरी अव मैं नहीं करूंगा आज मुझको मेंमसाहिव ने घी की चोरी लगाई कि तू घी पी गया और मुझे बुलाकर मेरा मुंह सूंघा यह सुन साहिव ने मैंमसाहिव से कहा यह वड़ा ईमानदार नौकर है, यह कभी नहीं चोरी करेगा हमने देखा तुमने इसका मुंह सूंघा यह कह खानसामा से कहा वैल खानसामा टुम हमारी नौकरी करो, हम टुमहारी तनख्वाह वढ़ावेगा यह सुन खानसामा बोला "वैरी वेल सर ।"[55]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जज और गवाह

एक जज किसी गवाह का इजहार ले रहे थे। गवाह शरारत से अक्सर हिकलाता था। जज ने खफ़ा होकर कहा "मैं समझता हूं कि तुम वड़े पाजी हो।" गवाह ने जवाव दिया "उतना पाजी हर्गिज़ नहीं हूं जितना कि हुजूर—मु—मु—मुझे खयाल करते हैं।"[56]

दीवानों का माल

एक वकील ने बीमारी की हालत में अपना सव माल और असवाव पागल दीवाने और सिड़ियों के नाम लिख दिया। लोगों ने पूछा यह क्या तो उसने जवाव दिया कि वह माल ऐसे से आदमियों से मुझे मिलाथा और अव ऐसे ही लोगों को दिए जाता हूं।[57]

बात की धुन

हाईकोर्ट के एक वकील साहव अपने स्पीच के ज़ोर में ऐसे वढ़ चढ़ चले कि जमीन को छोड़कर आसमान की वातें करने लगे, जज्ज ने घवड़ा कर अपना रूल टेवल पर पटका और बोले वस साहव वस आप हमारी हुकूमत से वाहर हो गए, भला सरकार का राज छोड़कर किसी दूसरे राज में चले जाते तव तो हम को सुनने का अख़तियार ही न था कहां अव तो आप इस दुनिया के ही वाहर पहुंचे।[58]

रिसाले का सम्मान

एक दिल्लगीवाज़ शखस ने एक वकील से जिसने किसी मजमून पर एक वाहियात का रिसाला लिखा था राह में मिला और बेतकल्लुफी से कहा "वाह जी तुम भी अजव आदमी हो कि मुझ से अव तक अपने रिसाले का ज़िकर भी न किया—अभी कुछ वरक जो मेरी नजर से गुज़रे उनमें मैंने ऐसी उम्दा चीज़ें पाई जो आजतक किसी रिसाले में देखने में न आई थीं" यह शख़स एक लाइक़ आदमी की ऐसी राय सुनकर खुशी के मारे फूल उठा और बोला "मैं आपकी क़दरदानी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का निहायत ही शुकर गुज़ार हुआ—मिहरवानी करके वतलाइये कि वह कौन कौन सी चीज़ें हैं जो आपने उस रिसाले में इस क़दर पसंद की।" उसने जवाव दिया आज सुवह को मैं क्या देखा कि एक लड़की आपके रिसाले के वरकों में गर्मागर्म समोसे लपेटे लिये जाती थी।[59]

दिल की बीमारी

एक डाक्टर साहव कहीं वयान कर रहे थे कि दिल और जिगर की बीमारियां औरतों से मर्दों को ज़ियादा होती हैं। एक जवान खूबसूरत औरत बोल उठी "तभी मर्दुए औरों को दिल देते फिरते हैं।"[60]

हकला थानेदार

थानेदार ने एक हकले सिपाही से कहा आज कुदई की चौकी पर तुमको पहरा देना होगा, सिपाही ने जवाव दिया "हहहम पहरा देने न–न–न जायेंगे ?" थानेदार ने पूछा "क्यौं" सिपाही बोला "जज—जितनी देर में हम कहैंगे क–क–क कौन है ? उ–उ–उ उतनी देर में च–च–च चोर द–द–द–द–दु दूर भाग जाएंगे।[61]

सूत न कपास जुलाहे से लट्ठम लट्ठा

दो जमींदार अपने गांव से कहीं को चले जाते थे, वाट में एक पचास साठ बीघे अच्छी भूमि का खंडला देखकर उनमें से एक ने कहा कि भाई यह ठौर हमारे तुम्हारे हाथ लगे तो क्या करो ? बोला मैं तो अपने वांट की भूमिमें फुलवारी लगाऊं कहो तुम अपनी भूमिमें क्या करोगे ? कहा मैं अपनी गायें भैंसे चराऊंगा इसने कहा भला मानो या बुरा मैं तो अपनी फुलवारी के पास न चराने दूंगा, वह बोला तुम्हारा कुछ ठीका नहीं है मैं अपनी ठाम में जो चाहूंगा सो करूंगा, निदान इसी भांति हुद्दा तुद्दी करके लगे हाथा पाई करने, इसमें कई एक वटोही जो झगड़ते देख इकट्ठे हो गए थे, उन्होंने बीच विचाव करके इन से पूछा कि तुम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्यौं आपस में लड़ते हो इसका का न कहो ? उन्होंने सब वृत्तांत कह सुनाया सुनते ही उनमें से एक मनुष्य बोला कि भाई तुम्हारी वही कहावत है कि, सूत न कपास जुलाहे से लट्ठमलट्ठा ।[62]

जमींदार का गुलाम

एक जमींदार बैठा आम खा रहा था। और उसके पास एक गरीब भर उन आमों पर टकटकी बांधे खड़ा था। मगर जमींदार उसकी तरफ़ झूठमूठ भी नहीं देखता था। एक बेर जमींदारने उसकी ओर मुंह फेरा और पूछा "तोहरे जानवरन कै का हाल हौ?" भर ने कहा "एक सुअरी तेरह ठे बच्चा दिहलेस है पर ओके थन बरहै हौ" जमींदार ने कहा "जब और बचरा दूध पीयत होई है तब एक ठे विचारा का करत होई" बदमाश भर ने मुंह बनाकर जवाब दिया "रोरे आम चुहके लीं तब गुलाम जौन कर: ला।"[63]

दुआ मांगना

एक मौलवी साहब अपने एक चेले के यहां खाने गये, जब सेज पर खाना चुना जा चुका चेले ने मोलाना साहब से दुआ मांगने कहा, एक लड़के ने जो वहां हाजिर था घबड़ा कर अपने बाप से पूछा 'बाबा जब यह कहीं खाने आते हैं तब हमेशा हाथ उठाकर यह बड़ी मिन्नत करते हैं, क्या जो इतनी आरजू न करें तो लोग बुलाकर भी इन्हें भूखा फेर दे।"[64]

योग्य मौलवी

किसी लाइक मौलवी ने एक बार निहायत उमदा और दिलचस्प तौर पर तकरीर की खैरात के बराबर दुनियां में कोई अच्छा काम नहीं है। एक मशहूर कंजूस जो वहां मौजूद था बोला "इस तकरीर से यह अच्छी तरह साबित हो जाता है कि खैरात करना फर्ज है इसलिये मेरा भी जी चाहता है कि फ़कीर हो जाऊं।[65]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौलवी साहब की खीर

एक मौलवी साहव लड़कों को रोटियों पर पढ़ाया करते थे एक रोज एक लड़के ने एक कूंड में लाकर मौलवी साहव को खीर दी मौलवी वहुत ख़ुश हुये खाते जाते थे और तारीफ करते जाते थे मौलवी ने लड़के से कहा कि क्या तेरी मा हम पर मोहित हो गई है कि ये तो मैं जानता नहीं मगर ये खीर मेरे वालिद के लिये वनी थी इसमें कुत्ता मुंह डाल गया था अम्मा ने कहा कि जा मौलवी साहव को दे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आ इतना सुन मौलवी ने कहा कि लाहौल विला ये कहकर वो कुंडा जमीन में दे मारा ये लड़का उसी वखत कुंडा फुटा देख रोकर बोला कि मौलवी साहव इस कुंडे में तो मेरा भाई पखाना फिरा करता था आप ने तोड़ डाला मेरी मा मुझको मारेगी ।''[66]

बहिरे के भंटे

एक वहिरा वाजार से भंटे लिये चला आता था, रास्ते में एक इनके दोस्त मिले । पूछा, अच्छे, वहरा समझा कि ये पूंछते हैं क्या लाये । ऐसा समझ बोला भंटा लाये हैं इस पर मित्र ने पूंछा लड़के वाले अच्छे हैं वहरा समझा कि मित्र पूछते हैं कि इनका क्या करोगे, बोला आज ही सब सारिन को भरता कर खैहें ।[67]

अंधा और अधेला

वलायत में एक अन्धे ने अपने गले में यह लिख कर लटका दिया था कि "मैं देख नहीं सकता मुझे अधेला देने में शर्म मत करो ।''[68]

क्रोधी अंधा

कोई क्रोधी अंधा कहीं को चला जाता था कि एक अंधे कुएं में गिर पड़ा और लगा पुकारने कि लोगों चलियो दौड़ियो मैं कुए में गिर पड़ा । लोग तरस खा दौड़ के वहां गए और कुए के पनघटे पर खड़े हो उसके निकालने का उपाय करने लगे । कुछ देर जो हुई तो वह भीतर से खफा होकर बोला कि शीघ्र निकालते हो तो निकालो नहीं तो मैं कहीं को चला जाता हूं तुम लोग मुझे फिर न पाओगे ।[69]

काने की शर्त

एक काने ने किसी आदमी से यह शर्त वदी कि जो मैं तुम से जियादा देखता हूं तो पचास रूपया जीतूं । और जव शर्त पक्की हो चुकी तो काना बोला कि लो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं जीता, दूसरे ने पूछा क्यौं ? इस ने जवाब दिया कि मैं तुम्हारी दोनों आखें देखता हूं और तुम मेरी एक ही ।[70]

मुफ्तखोरे

एक मुसलमान अमीर के दीवानख़ाने में एक मुफ़्तखोरे खाने की ताक में टहल रहे थे । जब देर हुई तो आप खिदमतगार से पूछने लगे "बेगू दस्तरखान कब बिछैगा" नौकर ने जवाब दिया "ज्योंही तुम जाओगे ।"[71]

दिल्लगी की बातें

किसी अमीर ने ज़रा सी शिकायत के लिये हकीम को बुलाया । हकीम ने आकर नब्ज़ देखी और पूछा—"आप को भूख अच्छी तरह लगी है"—अमीर ने कहा "हां" हकीम ने फिर सवाल किया—"आप को नींद भरपूर आती है"—अमीर ने जवाब दिया "हां" । हकीम बोला "तो मैं कोई दवा ऐसी तजवीज़ करता हूं जिस से यह सब बातें जाती रहें ।"[72]

अचूक जवाब

एक अमीर से किसी फकीर ने पैसा मांगा उस अमीर ने फ़कीर से कहा "तुम पैसों के बदले लोगों से लियाकत चाहते हो अब तक कैसे लायक आदमी हो गए होते" फ़कीर चटपट बोला "मैं जिसके पास जो देखता हूं वही उससे मांगता हूं ।"[73]

हैवान

एक फ़कीर एके भले आदमी के दरवाज़े पर आकर बोला, बाबा कुछ खैरात दिला वह बोला इस वक़्त कोई आदमी नहीं है फ़कीर बोला बाबा धर्म का काम है, ख़ैर थोड़ी देर के लिये आप ही आदमी बन जाओ ।"[74]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीन अहमक

तीन बेवकूफ एक मीनार के पास से निकले एक ने कहा, अगले ज़मानें में कैसे लंबे २ कारीगर थे, जो इस मीनार की चोटी तक पहुंचे, दूसरा बोला यह अहमक है, इसको हर एक वना सकता है ज़मीन पर लिटा कर वना लिया, फिर खड़ा कर दिया। तीसरा बोला तुम बेवकूफ़ हो तुम इसे क्या जानों कि यह क्यौंकर वनाया गया होंगा। सुनो हम वतलाते हैं यह इस तरह वना है पहिले यहां कुआं था उलट कर मीनार हो गया।"[75]

बेवकूफ

एक बेवकूफ इस ख़्याल से अपने सामने आईना रख कर सो रहा कि देखूं सोते वक़्त मेरी सूरत कैसी मालूम होती है।[76]

अफीमची

एक अफीमची चांदनी रात में ढालू ज़मीन पर पेशाव करने को बैठा तो पेशाव लहराती हुई नीचे इसकी तर्फ़ वहकर आने लगी। उसी वक़्त इनको पिनक का जोर भी सवार था उसको अपने तर्फ़ आते देख ("आप नशे के बीच तो थे ही") समझे कि काला सांप है जो मुझे काटने को आता है इस ख़्याल से आप ज्यौं २ पीछे खिसके त्यौं २ पेशाव की धार लहर मारती हुई इनकी तर्फ़ आवे, यहां तक कि वह पेशाव की लहर इनके पैरों से आ लगी तो अफीमची ने आह मार उससे चिपट कर कहने लगा ले मूजी काट खा।[77]

बीबी दौड़ मैं सारा खुला

एक अफीमची अपने घर के आमूदा थे घर में दो चार नौकर भी थे एक रोज आप को प्यास लगी लौंडी से कहा पानी लाना लौंडी एक ग्लास में जिसमें एक रेशम की लच्छी पड़ी थी उसी में पानी ले आई जव आप पानी के साथ उसे भी पी गऐ तो वो रेशम की लच्छी गले में जा अटकी आपने जो गले में उंगली डाली की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस लच्छी का एक सिरा आप के हाथ आ गया, लगे उसे निकालने, जब निकलते २ कई हाथ निकली तो आप समझे कि आतों का सिरा हाथ आ गया है यह समझ आप चिल्लाकर बीबी को पुकारते हैं बीबी दौड़ना मैं सारा खुला ।[78]

अरी तू उन जा (अफीमची)

एक दफे एक अफीमची की नाक पर मक्खी बैठ गई, अफीमची उस वक्त पिनक में थे, मक्खी से कहने लगे अरी तू उन जा, उन जा, ऐं, ऐं, तू, उनती नहीं, ऐसा कहते २ बड़ी देर हुई जब मक्खी न उड़ी तब अफीमची ने जेब से फट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चाकू निकाल अपनी नाक पर ऐसी जोर से मारा कि नाक जड़ से कट गई तव आप मक्खी से कहते ले हरामजादी अब काहे पर बैठेगी अव तो मैंने तेरा अड्डा ही उड़ा दिया आप को नाक कटने का कुछ रंज न हुआ पर मक्खी उड़ाने की खुशी हुई ।[79]

अमृत की वर्षा

एक रोज किसी जगह कथा वच रही थी। बहुत आदमी सुनने के लिये आये इतने में एक आदमी को बैठे २ नींद आ गई और एक कुत्ता ने आकर उसके मुंह में पेशाब कर चल दिया थोड़ी देर वाद जव कथा संपूर्ण हुई सव लोग उठ २ अपने २ घर चले इनको भी किसी ने सोते से जगाया जब घर आते थे रास्ते में सव कहने लगे भाई आज की कथा में क्या अमृतवर्षा अर्थात् अच्छी २ बातें सुनी। इस पर वह आदमी जो सो गया था, चट बोल उठा, हां भाई ठीक कहते हो, परन्तु अमृत कुछ २ खारा होता है अगर आप यकीन न लांय तो मेरा मुंह चाट देखो, अभी तक मेरे मुंह में लगा है सब समझ गये कुत्ता मूत गया होगा ।[80]

जैसा बाप वैसा बेटा

कोई पोस्ती जंगल में बैठा कटोरी में पोस्त घोल रहा था । दैवात किसी झाड़फूंक से एक खरगोश जो निकल के दौड़ा तो उसके धक्के से इसकी कटोरी लुढ़क पड़ी यह झुंझलाकर बोला, कि तुझसे क्या कहें, तेरे बाप ही से जाकर कहेंगे। इतना कह कूंड़ी सोंटा कांख में दवा, नगर में जा हर एक चौपाये को देखता चला; निदान एक गधे को, जो उसके वरन के समान था पाया, तो वह गधे के पास जा उस की पीठ पर हाथ रख चाहे कि कुछ कहे, वों हीं उसने फिर कर एक ऐसी दुलत्ती मारी कि यह विचारा हाय कर बैठ गया और हंसकर बोला कि क्यों न हों जिसका बाप ऐसा हो, उसका लड़का वैसा हुआ हो चाहे इतना कह चला गया ।[81]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गधे और घोड़े की पहचान

किसी ने सवारी के वास्ते परमेश्वर से बड़े प्रार्थना से एक घोड़ा मांगा नित्य सांझ और सबेरे यही प्रार्थना करता। जिस महल्ले में वह रहता था उस महल्ले में संयोग से चोरी हुई और राजा के सिपाही लोग संदेह में उस बिचारे को पकड़ ले गए, राजा ने भी भ्रम से उसी को चोर ठहराया और हुकुम दिया कि इस को काला मुंह करके गधे पर चढ़ाओ जव बेचारा गधा पर चढ़कर चला तो परमेश्वर से कहने लगा कि वाह परमेश्वर कितने दिन ईश्वरता करते हुए पर अव तक घोड़े और गधे को न पहचाना ।[82]

देवता के वरदान

दो आदमियों ने किसी देवता से वरदान मांगा एक ने कहा कि मैं चोरी तो करूं मगर चोर न कहलाऊं उसको देवता ने कहा कि जा तू सुनार हो जा। दूसरे ने कहा कि मैं भौंकू तो मगर कुत्ता न कहलाऊं देवता ने कहा कि जा तू भाट हो जा ।[83]

झूठ की रफ्तार

एक शख़्स ने किसी से कहा कि अगर मैं झूठ बोलता हू तो मेरा झूठ कोई पकड़ क्यों नहीं लेता। उसने जवाव दिया कि आपके मुंह से झूठ इस कदर जल्द निकलता है कि कोई उसे पकड़ नहीं सकता ।[84]

चुटकिले

एक ने एक से कहा कि एकादशी का व्रत करके द्वादशी को पारण करना उसने व्रत तो नहीं किया पर पारण किया जव उसने पूछा कि कहो व्रत किया था तव वह बोला कि भाई व्रत तो नहीं हो सका पर तुम्हारे डर के मारे पारण कर लिया कि जो वनै सोई सही ।[85]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सौदागर का भाग्य

एक बड़ा सौदागर किसी साहिब कमाल फ़कीर के यहां जाकर मुरीद हुआ और पीर की खिदमत में आठों पहर हाजिर रहने लगा, खुदा का चाहा छः महीने के अरसे में उस का ऐसा काम बिगड़ा कि खाने पीने को भी कुछ पास न रहा, एक रोज पीर ने इसे उदास देख कहा कि बाबा क्या तूने यह मसल कभी नहीं सुनी जो इतनी फिक्र करता है।

अलहाद करता की बातें क्या करता क्या न करे.
हाथी मार गर्द में डाले अदना के सिर छत्र धरे.
रीति भरे भरी ढुलकावे मिहर करें तो फेर भरे।[86]

पगड़ी की धौल

एक निर्लज्ज की पगड़ी पर धौल बैठी तो बोला कि बरताने तक पहुंची।[87]

नाप के जूते

एक साहब के पैर कुछ छोटे बड़े थे। मोची को आपने हुक्म दिया कि ऐसा ही जूता बना लावै। जब जूता बन कर आया और आप बड़ा छोटे पैर में पहरने लगे तो ख़फ़ा होकर बोले कि एक से दूसरा छोटा बनाने को कहा था उसके बदले दुष्ट ने दूसरे से एक और बड़ा बना दिया।[88]

बहुत चूके

एक जगह ऐसी शादी हुई कि दूलह की उमर 60 वर्ष और दुलहन की 10 वर्ष की और दुलहिन के बाप की भी 60 वर्ष की उमर थी। जब शादी होकर विदा होने लगी तो लड़की के बाप ने अपने हम उमर दामाद से कहा कि आज से मैं अपनी लड़की तुम्हारे सुपुर्द करता हूं, तकलीफ आराम देना अब आप का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काम है यह सुन साठा दामाद बोला वाह जी वाह क्या आप फरमात हैं अजी जैसी आपकी लड़की वैसी मेरी ।[89]

पाचन शक्ति

एक भले आदमी से किसी ने पूछा "औरतों के पेट में भी कोई वात पच सकती है, उसने जवाव दिया 'हां सिर्फ़ एक वात', 'कौन सी' (उसने पूछा) 'उनकी उमर' (उसने कहा)[90]

बहुभाषी

मिल्टन् से किसी ने पूछा "आप अपनी लड़कियों को कै जवान सिखलाइयेगा ? जवाब दिया "औरतों को एक ही ज़वान अच्छी होती है ?"[91]

पाप का आकार

एक ने अपने किसी दोस्त से पूछा "तुमने ऐसी छोटी (कम उम्र) औरत से क्यों शादी की ? उस (आदमी) ने जवाब दिया, 'तुमने सुना नहीं, पाप जितना छोटा पल्ले बंधे उतना ही अच्छा है ।'[92]

हाज़िर जवाब

वलायत का वर्ल्ड अखबार लिखता है कि हाल में एक मम साहिब कुछ लोगों को बड़ी चालाकी के साथ उमर का हिसाव समझा कर अपने सिन (सन्) को हद से ज़ियादा घटा रही थीं । उनकी लड़की निहायत हाज़िर जवाव थी उससे न रहा गया और बात को काट कर बोल उठी । अम्मा भला अपनी और मेरी उमर में कम से कम नौ महीने का फ़र्क़ तो छोड़ दो ।[93]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ड्यूक आव अरगाइज

एक दिन ड्यूक आव अरगाइज नाचघर में लेडी लोगों के साथ बैठे थे। एक साहव घुटने तक बूट चढ़ाए गर्द में भरे मचर मचर करते हाथ में चाबुक लिए वड़े शान से आकर के उनके पास बैठे गए। ड्यूक साहव ने उनसे कहा मैं आप का वहुत ही अहसानमन्द हुआ इस फ़िक़रे पर वड़े सटपटाए और घवड़ा कर बोले हें हें मुझसे कौन सी ऐसी खिदमत वन पड़ी ? हंसोड़ ड्यूक ने सिर हिलाकर कहा यही कि आप अपने साथ अपना घोड़ा भी न लेते आए।[94]

कंजूस की उदारता

सर वाल्टर स्काट ने एक गरीब मजदूरे को चार आने मजदूरी के बदले एक रूपया दिया और हँस कर उस्से कहा 'देखो हमारे वारह आने तुम्हारे यहां वाकी रहे'; मज़दूर ने आसमान की तरफ हाथ उठाया और कहा खुदा हजूर को तव तक सलामत रक्खे जव तक कि मैं आप के इस देंन से अदा न हूं।[95]

भेद

कृष्ण प्रसाद ने दामोदर से कहा "तुमने हमारा भेद क्यौं खोल दिया" "हहा ! ! इसको तुम भेद खोलना कहते हौ ? जव हमने जाना कि हम उसको नहीं छिपा सकते तो हमने क्या बुरा किया कि उस भेद को ऐसे आदमी से कह दिया जो उसे छिपा सकता था।।"[96]

खुशामद

एक ना मुराद आशिक से किसी ने पूछा "कहो जौ तुम्हारी माशूक: तुम्हें क्यौं नहीं मिली" विचारा उदास होकर बोला "यार कुछ न पूछो मैंने इतनी खुशामद की कि उसने अपने को सचमुच परी समझ लिया और हम आदमियों से बोलने में भी परहेज किया।"[97]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुंहतोड़ जवाब

एक ने कहा 'न जाने इस लड़के में इतनी बुरी आदतें कहां से आईं ? हमें यक़ीन है कि हमसे कोई बुरी वात नहीं सीखी लड़का चट से बोल उठा 'वहुत टीक है क्योंकि हमने आपसे बुरी आदतें पाईं होंती तो आप में वहुत सी कम हो जातीं ।।"[98]

अद्‌भुत संवाद

'ए ज़रा हमारा घोड़ा तो पकड़े रहो' "यह कूदेगा तो नहीं" "कूदेगा ! भला कूदैगा क्यों ? लो संभालो" "यह काटता है ?" नहीं काटेगा, लगाम पकड़े रहो" "क्या इसे दो आदमी पकड़ते हैं तव सम्हलता है" "नहीं "फिर हमें क्यौं तकलीफ़ देते हैं ? आप हई हैं ।"[99]

लाला साहब का रमचेरा

लाला रामसरन लाल ने देर होने पर रामचेरा से खफ़ा होकर कहा "क्यौं बे नामाकूल आज तू इतनी देर कर आया कि और नौकरों को काम शुरू किये एक घंटे से ज़ियादः गुजर गया" यह नटखट झटपट बोला "तव लाला साहव ओमे वात का हौ सांझ के आज हम और लोगन से एक घंटा अगौंए चल जाव बरावर होय जायेव ।।[100]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट—1

संदर्भ

(1) Oriental Faublist or Polyglot Translations of Esops and other Ancient Fables from the English Language into Hindoostanee, Persian, Arabic, Brij Bhasha, Bangla and Sunskrit, The Roman character by various hands under the direction and superintendence of John Gilchrist for the use of the college of Fort william, Calcutta Printed at Harkaru office, 1803.

1/6 2/6

(2) Hindee Roman orthoepigraphical ultimatum. John Borthwick Gilchrist, Second Edition, London 1820, Printed for Black Kingsbury Parbury and Allen Book Sellers to the East India Company, Leadenhall Street.

3/33	12/28–29	21/23–24
4/33–34	13/8	22/35–36
5/51–52	14/38–39	23/45–46
6/26	15/50–51	24/32–33
7/46–47	16/28	25/19
8/47–48	17/9–10	26/53–54
9/2	18/20–21	27/46
10/48–49	19/50	
11/30	20/29	

(3) उपदेशकथा। और इंलेण्ड की उपाख्यान का चुम्वक ष्टुयार्ट साहेव ने किया हुआ।
Stewart's Historical Anecdotes with a sketch of the History of England and Her connection with India. Translated by Rev. W. T. Adam, Printed at the Calcutta School Book Society's Press, 11, Circular Road, 1825,
28/3–4

(4) Hindee Hindoostanee Selections to which are prefixed the Rudiments of Hindoostanee and Brij Bhasha grammar compiled for the use of the interpreters to the Native Corps of the Bengal Army in

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

two volumes Vol. I, Calcutta Printed at the Hindoostanee Press, Fancy Lane, 1827.

29/198	36/199	43/228–229
30/201	37/199–200	44/208–209
31/197	38/206	45/208
32/232	39/205	46/206–207
33/207	40/197	47–204
34/211	41/206	
35/198	42/210	

(5) मनोरंजन इतिहास अर्थात बालकों को ज्ञानदायक और नीति शिखाने का उपाख्यान
अनुवादक एम० टी० एडम
कलकत्ता स्कूल बुक सोसाइटी 1835

48/3	49/4

(6) मंतखबाते हिन्दी
जॉन शेक्सपियर
50/18वीं नक्ल

(7) परिहासिनी अर्थात हंसी दिल्लगी, पंच, चोज़ की बातें और चुटकिले। भारत भूषण भारतेन्दु श्री हरिश्चन्द्र लिखित जिस को हिन्दी भाषा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोविलास के लिये क्षत्रियपत्रिका सम्पादक म० कु० बावू रामदीन सिंह ने प्रकाशित किया. पटना—'खड्ग विलास' प्रेस, बांकीपुर साहिब प्रसाद सिंह ने मुद्रित किया 1889

51/19	66/32	81/18
52/33	67/34	82/26
53/10	68/25	83/32
54/38	69/15	84/8
55/34	70/9	85/14
56/9	71/12	86/13
57/9	72/7	87/14
58/11	73/12	88/25
59/11	74/36	89/56
60/8	75/45	90/19
61/20	76/8	91/20
62/19	77/53	92/20
63/21	78/37	93/21
64/13	79/38	94/20
65/14	80/36	95/25

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(8) हरिश्चन्द्र चन्द्रिका, अक्टूबर 1877 ईसवी

96/35 98/35–36 100/36
97/35 99/36

(9) भारतेन्दु की खड़ीबोली का भाषाविश्लेषण––उषा माथुर, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1971

(10) खड़ीबोली : विकास के आरंभिक चरण––उषा माथुर (शीघ्र प्रकाश्य)

(11) नीलामी बोली : एक समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन (भारतीय समाजविज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रवर्तित प्रायोगिक परियोजना का प्रतिवेदन)—उषा माथुर, गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ, 1980

(12) A Dictionary of Urdu, Classical Hindi and English
John T. Platts
London, Crosby Lockwood and Son
7, Stationer's Hall Court Ludgale Hill
E.C. 1911. Fourth Impression.

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट—2

शब्दार्थ और मुहावरे

शब्दार्थ

अताई	धमार्थ गाने और नृत्य करने वाले
अदना	तुच्छ या सामान्य
अधेला	आधा पैसा
अनचढ़	जिसे चढ़ने का अभ्यास न हो
अनवनाव	अनबन
अमली	कर्मठ, जो अपने आदत के अनुसार नशा करे
आखेटी	शिकारी
आमूदा	पूर्ण
उदासी	त्यागी और विरक्त स्वभाव का व्यक्ति, उदासी सम्प्रदाय से संबंधित
कत्तले	मिट्टी के छोटे-छोटे टुकड़े
कमबख़्त	अभागा, भाग्यहीन
करार	कगार, किनारा, ज़मीन का उठा हुआ हिस्सा
कौड़ी	सिक्के के स्थान पर प्रचलित एक प्राचीन मान
खंडला	भूमि का छोटा टुकड़ा
खटराग	बेसुरा, वेताला गाना
खप्पर	योगियों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला मिट्टी का एक पात्र
खिजलाना	क्रोधित होना
ख़रासान	फ़ारस देश का एक प्रदेश
गदाई	भिक्षावृत्ति
गंधीला	वदवूदार
घर	कमरा
घटाटोप	गाड़ी, खड़खड़े या अन्य किसी वस्तु को चारों ओर से ढकने के लिए ऊपर से डाला जाने वाला परदा
घतौना	घात लगाकर माल उठा लेना
घपर्चा	वस्तु को पकड़ रखने के लिए दोनों हाथों के पंजों की गठान
घुड़चढ़ा	वह जो घोड़े पर सवार हो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चबेना	भुना हुआ अनाज
चुहकना	चूसना
छदाम	सिक्के का एक पुराना मान, जिसके चार, पुराने एक पैसे के बराबर होते थे
छान	छप्पर
छूछली	एक प्रकार का खेल, जो मेंढक आदि पशुओं के साथ खेला जाता है
जोतकी	ज्योतिषी
ज्योतिक	ज्योतिष
जोयसी	ज्योतिषी
टका	दो पैसा, चाँदी का पुराना सिक्का
टोल	झुंड
ठट्ठा	हंसीमज़ाक
डानडी	पहाड़ी पर राह बताने वाले
ढपना	ढक्कन
तमहीद	भूमिका बाँधना
तोड़ा	रुपयों की थैली
तोशकख़ाना	घर में क़ीमती वस्त्र रखने का कक्ष
दरूद	आशीष
दस्तरख़ान	वह कपड़ा जिसके ऊपर खाना खाने के लिए थाल आदि सजाए जाते हैं
दहनम	ध्यान
दारद	दुष्ट, वीर
दुधेल	दूध देने वाली गाय
दुलत्ती	दो लात
नाबीना	मूर्ख, जिसे दिखाई न पड़े
परवा	अल्पावधि का ठेका
पारण	व्रत या उपवास के बाद किया जाने वाला भोजन या उसके दूसरे दिन किया जाने वाला तत्संबंधी कृत्य
पोस्ती	अफ़ीम खाने वाला
फातिह	प्रार्थना, कुरान की पहली आयत जो प्रायः मृत व्यक्तियों की आत्मा की शांति और सद्गति की कामना से उनकी कब्र या मजार पर पढ़ी जाती है
बज़ारी	बज़ार का
बरताना	कलेजा
बरहक्क़	हक़दार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बलाख़ाना	ऊपर की मंजिल, बैठक या आराम करने का कमरा
बाँका	गुण्डा
बुलाहट	बुलावा
भर	एक जाति विशेष, ग़रीब
भाट	राजाओं के यश का वर्णन करने वाले कवि
भैया	लेखन कार्य के लिए नियुक्त व्यक्ति
मुतरद्दिह	चिंतित
मेंडकी	घोड़े की पूंछ का अंतिम भाग
रंडी	स्त्री
रिसाला	पत्रिका
रुकन	ख़रीदी हुई वस्तु के साथ विना मूल्य दिए कोई अन्य वस्तु लेना
वलेंडा	छत रोकने के लिए लगाई जानेवाली मोटी लकड़ी
बिराना	मुफ्त का माल उड़ाने खाने वाला
संवारना	अलंकृत करना
सीस	काँच का व्यापारी
सूना	निर्जन या सुनसान स्थान
सोंहीं	सम्मुख
हकला	हकलाकर बोलने वाला
हिंगलाज	देवी का एक विशिष्ट मंदिर, मध्य प्रदेश में

मुहावरे

इंतज़ारी खैंचना	प्रतीक्षा करना
उदास होना	निराश होना
खप्पर फूटना	लड़ाई झगड़ा होना
खोटी चाल	बुरी आदतें होना
गिड़गिड़ाकर कहना	विनय करना
चूक पड़ना	गलती होना
चौकस होना	प्रवीण होना
जी में बात आना	विचार उठना या आना
जी में रखना	मन में छिपाना
झींककर बैठना	तंग होना, निराश होकर बैठना
डोंडी फेरना	कुछ कहना या विज्ञापन की एक प्राचीन प्रणाली, ढिंढोरा पीटना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तमहीदे बांधना	भूमिका बांधना
नालिशी होना	उपस्थित होना, सामने आना
निर्बोध बनाना	मूर्ख बनाना
पीठ लगना	सवार होना
पोतड़ों का रज्जा होना	प्रसन्नता या किसी के जन्म लेने से होनेवाली समृद्धि
बाट देखना	प्रतीक्षा करना
बादशाही नगर होना	संपन्न और समृद्ध शहर
वेपीर होना	निर्मम होना
भरम गंवाना	विचार या शक्ति में कम होना
मन में ठहरना	विचार आना
हाथ बांधकर कहना	नम्रतापूर्वक कहना
यकीन लाना	विश्वास होना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट—3

लेखक-परिचय

डॉक्टर बॉर्थविक गिलक्राइस्ट—

हिन्दी साहित्य के निर्माण और विकास के इतिहास में जिन विदेशी विद्वानों का महत्व-पूर्ण योगदान रहा है, उनमें गिलक्राइस्ट का नाम अग्रगण्य है। इनका जन्म 1759 ईसवीं में एडिनबरा में हुआ था। ये चिकित्सक थे और सर्जन के रूप में भारत आए थे। भारतीय भाषाओं में उनकी अभिरुचि और अध्ययन अनुशीलन को देखते हुए, इन्हें फोर्टविलियम कॉलेज के हिन्दुस्तानी विभाग की अध्यक्षता का दायित्व सौंप दिया गया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने ईस्ट इंडिया कम्पनी के कर्मचारियों को भारतीय भाषाओं और भारतीय संस्कृति से परिचित कराने के उद्देश्य से भारत की प्रमुख भाषाओं में विविध विषयों की रचनाएँ तैयार करवाईं। इन्होंने दिल्ली और आगरा के आसपास बोली जाने वाली हिंदी भाषा को 'खड़ी बोली' कहा और इसी में लल्लू जी लाल से 'प्रेम सागर' और सदल मिश्र से 'नासिकेतोपाख्यान' शीर्षक रचनाएँ तैयार करवाईं। इन्होंने स्वयं भी हिन्दी और हिन्दुस्तानी में कोश, व्याकरण ग्रंथ तथा अन्य विषयों की रचनाएँ लिखीं। इनके ग्रंथों में 'Oriental Linguist Hindee Roman orthoepigraphical ultimatum', 'A Dictionary English and Hindoostanee' प्रसिद्ध हैं। इन्होंने हिन्दी की तीन प्रमुख शैलियां निर्धारित की। प्रथम, फ़ारसी शैली या कोर्ट स्टाइल, द्वितीय, हिन्दुस्तानी स्टाइल (उर्दू) तथा तृतीय, हिन्दवी स्टाइल।

डब्ल्यू० टी० एडम—यह भी 19वीं शती पूर्वार्ध के एक अन्य विदेशी विद्वान थे। इनका नाम हिन्दी भाषा के अनुवादकों में लिया जाता है। इन्होंने हिन्दी भाषा में गणित और व्याकरण संबंधी ग्रंथ लिखे और 'उपदेशकथा' शीर्षक से प्राचीन कथाओं का अनुवाद किया। यह कलकत्ता स्कूल बुक सोसाइटी से प्रकाशित हुआ।

एम० टी० एडम—रेवरेंड मैथ्यू एडम लंदन की मिशनरी सोसाइटी की ओर से भारत आए थे। यह 1880 ईसवीं तक भारत में रहे। यहाँ इन्होंने हिन्दी भाषा में कोश, व्याकरण तथा अन्य कई रचनाएँ लिखीं। कुछ रचनाओं के अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद भी किए। अनूदित रचनाओं में 'मनोरंजन इतिहास' उल्लेखनीय है। यह कलकत्ता स्कूल बुक सोसाइटी की ओर से प्रकाशित हुई।

जॉन शेक्सपियर (1774 ईसवीं–1858 ईसवीं)—हिन्दी के आरंभिक व्याकरण लेखकों में जॉन शेक्सपियर—'मंतखबाते हिन्दी', 'A Grammar of Hindustani Language' के लिए प्रसिद्ध है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विलियम प्राइस—यह भी फोर्टविलियम कॉलेज के हिन्दुस्तानी विभाग के अध्यक्ष पद पर रहे। इन्होंने 'Hindee Hindoostanee Selections' ग्रंथ तैयार किया, जिसमें हिन्दी से अतिरिक्त ब्रजभाषा गद्य की रचनाएँ भी संग्रहीत हैं। ये हिन्दी के साथ बंगला और संस्कृत भाषाओं के भी ज्ञाता थे। अध्यक्ष पद पर नियुक्त होने से पूर्व ये विद्यार्थियों को बंगला और संस्कृत भाषाएँ पढ़ाते थे। अपने अध्यक्षता काल में इन्होंने हिन्दी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र—हिन्दी साहित्य के इतिहास की सुदीर्घ अवधि में, जिन साहित्यकारों के नाम से एक साहित्यिक युग का नामकरण हुआ, उनमें भारतेंदु हरिश्चन्द्र का नाम सर्वप्रथम गण्य है। हरिश्चन्द्र का जन्म 9 सितंबर 1850 ईसवी में बनारस में हुआ था और मृत्यु 1885 ईसवी में। अपने जीवन की इस संक्षिप्त सी अवधि में इन्होंने संस्कृत, फ़ारसी और अंग्रेजी आदि भाषाओं के ज्ञान के आधार पर हिन्दी भाषा और साहित्य को धनी बनाया। इन्होंने अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय नाटकों में दिया। 'अंधेर नगरी' और 'भारतदुर्दशा' उनके प्रसिद्ध नाटक हैं। उन्होंने हिन्दी काव्य को नया रूप दिया और जीवनी, आलोचना, इतिहास और पुरावृत्त संबंधी लेख लिखकर हिन्दी गद्य को समृद्ध बनाया। व्यंग्य विनोद शैली में स्तोत्र और चुटकुले लिखकर हिन्दी साहित्य के कलेवर को संवारा। इन्होंने भाषा की यथार्थ उन्नति की भावना से 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' और 'हरिश्चन्द्र मैगज़ीन' जैसी पत्रिकाओं का संपादन भी किया। हरिश्चन्द्र की विद्वता और कीर्ति को देखकर इन्हें 'भारतेंन्दु' पदवी से विभूषित किया गया और इनके नाम से संवत् भी चलाया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh